



# महात्मा शेखसादी



## हिन्दी के लिए विराट् उचे

## कलकत्ते में १००००) की कम्पनी।

अब आप को हिन्दी और संस्कृत पुस्तकों के लिए इधर उधर बीस जगह भटकने की ज़रूरत नहीं रही . एक कार्ड लिखिए श्रीर घर बैठे कलकत्ते से सब स्थानी की. सब तरह की पुस्तकें मंगा लीजिए। श्रध्यात्म, इतिहास, मनोहर श्रीर शिक्षाप्रद उपन्यास, रसीले काव्य, जीवनं चरित्र, उत्तमोत्तम नाटक, वालकोपयोगी, स्त्रियोपयोगी, शास्त्रीय, राष्ट्रीय, श्रार्थसमाजी, सनातंनी, रामायण, स्तोत्र, सभी प्रकार की पुस्तकें मिलती हैं। इंडिएन, अभ्युदय, ॐकार, नवलकिशोर, खड्गविलास. वेङ्कटेश्वर, निर्णयसागर, चित्रशाला, भारतमित्र, वर्मन, प्रताप, राजपूत, वैदिक, ब्रह्म, हिन्दी ब्रन्थरत्नाकर, हिन्दी गौरव प्रन्थमाला, हरिदास कम्पनी, गृहलदमी, काशी-नागरी-प्रचारणी सभा, मनोरंजन प्रन्थमाला,1 प्रकाश पुस्तकालय, श्रारोड़ा-पुस्तक-भएडार, भारत-सेवक-समिति, साहित्यभवन, लाला रामनारायणुलाल, बाब् मैथिलीशरण गुप्त, प्रेम-मन्दिर, श्रार्थ-प्रनथावली श्रादि सभी प्रसिद्ध प्रेसों श्रीर पकाशकों की पुस्तकें रखने का प्रवन्ध किया गया है। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, तथा संस्कृत की पथमा, मध्यमा, और आचार्य श्रादि परीक्षाओं की पुस्तकों भी यहां से मिलती हैं।

# हात्मा शेखसादी

( जीवन-चरित्र तथा उनके ग्रन्थों का वर्णन )

लेखक —

शीयक प्रेमनतः। BVCL

11706

928.915S P91oM(H)

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, १२६ हैरिसन रोड, कलकत्ता।

लाला भगवानदास गुप्त के प्रवन्ध से कमरशल प्रेस, जुही-कलां, कानपुर में छुपी।

ं सम्बत् १**८७४** 57\_

1. Canc. 11706-

# विषय सूची।

विषय				पृष्ठ
परिचय		` •••	•••	•••
प्रथम श्रध्याय	( जन्म )	•••	•••	8
दूसरा "	(शिद्या)	•••	•••	3
तीसरा "	( देशभूमण )		•••	•
चौथा "	(श्रीराज़ में पुन	-		
पांचवां "	( रचनार्ये और उनका महत्व ) २७			
छुठवां "	(गुलिस्तां)	•••	•••	३३
	( बोस्तां )	•••	***	पृ६
सातवां "	( सादी की लो	कोक्तियां )	•••	ફ્ફ
श्राठवां "	( चरित्र )	•••	•••	દર



## परिचय

शे

्यू सादी की गंणना उन महात्माओं में है जिन के विचारों का प्रभाव केवल ईरान ही में नहीं वरन समस्त संसार पर पड़ा है। वह कवि थे, लेकिन पेसे कवि जो किसी उच्च उद्देश्य को पूरा करने के लिए जन्म लेते हैं।

उन्होंने केवल काव्य-प्रेमियों के मनोरखन के निमित्त अपनी काव्य-शक्ति का उपयोग नहीं किया। उनका उद्देश्य अपने भाइयां की नीति, विचार तथा व्यवहार का संशोधन करना था और उन्होंने अपनी कविता-शंकि सर्वस्व इसी उद्देश्य की मेंट कर ही यिदि संसार के किसी किव के विषय में यह कहा जा सक्ता है कि ईश्वर का सन्देशा वह अपने वन्ध्रवां को सुनाने के लिए आया था तो वह किव शेख सादी हैं। एक विद्वान पुरुष का कथन है कि किव का काम मानवचरित्र का अङ्कत वा भावों का दर्शाना नहीं है, उसका काम उन सचाइयों को प्रकट करना है जिनका उसने अपने जीवन में अनुभव किया है। इस हि से देखिये तो सादी का स्थान वहुत ऊंचा है! मानव-स्वभाव का जितना अनुभव उनको था, संसार को जितना और जिस तरह उन्होंने देखा, उतना कदाचित्

किसी अन्य कवि ने न देखा हो । उन्हों ने जो कुछ लिखा है वह उनका श्रपना श्रमुभव है । उस समय पृथ्वी का जो भाग सभ्य समभा जाता था वह सदैव सादी के पैरों तले रहताथा। वह बहुधा भूमण करते रहते थे और जो अनुठी तथा शिजापद बातें देखते थे उन्हें अपने विचार कोष में संग्रह करते जाते थे। यही कारण है कि शेख़ सादी की गुलिस्ताँ और बोस्ताँ का आज जितना श्रादर है उतना तुलसीकृत रामायण के सिवा कदाचित् किसी श्रन्य ग्रन्थ का न होगा। जिसने कुछ थोड़ी सी भी फ़ारसी पढ़ी है वह सादी से श्रवश्य परिचित है। उनकी दोनों पुस्तकें प्रत्येक पुस्तकालय, प्रत्येक विद्यालय तथा प्रत्येक विद्याप्रेमी के आदर की सामग्री रही हैं। शेख़ सादी केवल पद्य-रचना ही न करते थे, वह गद्य रचना में भी श्रद्धितीय थे। गुलिस्ताँ का जितना श्रादर है उतना बोस्ताँ का हर्गिज़ नहीं है। सादी ने स्वयं गुलिस्ताँ पर अपना गर्व प्रकट किया है। बोस्ताँ के टकर की पुस्तकों फ़ारसी में वर्तमान हैं। लेकिन गुलिस्ताँ की समानता करनेवाली कोई पुस्तक नहीं है। श्रनेक वड़े बड़े लेखकों ने इस ढङ्ग की पुस्तकें लिखने का प्रयत्न किया, किन्तु सफल न हुए। इसकी भाषा इतनी मधुर, लेख-शैली इतनी हृद्य-थ्राही, श्रौर वाक्य-रचना ऐसी अनुठी है कि नीति-विषय पर ऐसा ग्रन्थ संसार भर में न होगा। ईसप की नीति-कथायें बहुत प्रसिद्ध हैं; इसी प्रकार पंचतंत्र श्रौर हितो-पदेश की कथात्रों का भी बहुत प्रचार है, पर इन पुस्तकों में

कथायें प्रायः लम्बी श्रौर पश्-पत्ती श्रादि के सम्बन्ध में हैं सादी के पास निज श्रतुभूत घटनाश्रों का इतना वाहुल्य है, श्रीर वह ऐसे मौके से उन्हें काम में लाते हैं कि उन्हें कल्पित कथाओं के गढ़ने की श्रावश्यकता ही नहीं थी । वर्त्तमान समय में श्रंग्रेजी के प्रसिद्ध थ्रन्थकार डाक्टर स्माइल्स, ब्लैकी, कावेट, मारडन श्रादि ने चरित्र-सुधार श्रोर नीति पर श्रच्छी श्रच्छी पुस्तकँ लिखी हैं, किन्तु विचार करके देखने पर इनकी पुस्तकों में वृढ़े शोख सादी की लेखरौली साफ भलकतो है। सादी ने इस पुस्तक का नाम बहुत ही उचित रक्खा। यह ऐसी अ मनोरंम वाटिका है कि श्राज छः शताब्दियों के वीतजाने पर भी वैसी ही हरी भरी, नवपुष्पित श्रौर सुसज्जित वनी हुई है। संसार में ऐसी कदाचित् ही कोई उन्नत भाषा होगी जिसमें इसका श्रनुवाद न हुआ हो। श्रतएव ऐसे महान लेखक से हिन्दी-प्रेमियों का परिचय कराना आवश्यक है 1





# -ॐ शेख़ सादी 🐲

### क्षम अध्याय

#### जन्म



ख मुसलहुद्दीन, उपनाम सादी, का जन्म सन् ११७२ ई० में शीराज़ नगर के पास पक्त गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम अब्दुल्लाह, और दादा का नाम शरफुद्दीन थाँ। शेख़ इस घराने की सम्मानस्चक पदवी थी। क्योंकि उनकी बुत्ति धार्मिक शिवा-दीवा देने की थी। लेकिन इनका खानदान सैयद

थाँ। जिस प्रकार श्रन्य महान् पुरुषों के जन्म के सम्बन्ध में श्रनेक श्रलोकिक घटनायें प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार सादी के जन्म के विषय में भी लोगों ने ख़ूब कहपनायें की हैं। लेकिन उनके उहलेख की ज़रूरत नहीं जान पड़तीन सादी का जीवन हिन्दी तथा संस्कृत के श्रनेक कवियों के जीवन की मांति ही श्रन्थकारमय है और उनकी जीवनी के सम्बन्ध में हमको श्रद्धमान का सहारा लेना पड़ता हैं। यद्यपि उनका जीवनदृत्तान्त फ़ारसी श्रन्थों में बहुत विस्तार के साथ लिखा हुश्रा है तथापि उनमें श्रद्धमान की माश भांति सादो भी दुर्ब्यसनों में पड़ जाते लेकिन उनके पिता की धार्मिक शिज्ञा ने उनकी रज्ञा की ।

यद्यपि शीराज में उस समय विद्वानों की कमी न थी और वड़े बड़े विद्यालय स्थापित थे, किन्तु वहाँ के वादशाह साद बिन जंगी को लड़ाई करने की ऐसी थुन थी कि वह बहुधा श्रपनी सेना लेकर एराक पर श्राक्रमण करने चला जाया करता था, और श्रपने राज्य काज की तरफ से वेपरवाह हो जाता था। उसके पींछे देश में घोर उपद्रव मचते रहते थे और बलवान शत्रु देश में मार काट मचा देते थे। ऐसी कई दुर्घटनायें देखकर सादी का जी शीराज से उचट गया। ऐसी उपद्रव की दशा में पढ़ाई क्या होती? इस लिए सादी ने युवावस्था में ही शीराज से बुगदाद को प्रस्थान किया।





स समय शीराज़ से युग़दाद की यात्रा बहुत कठिन थी। काफिले चला करते थे। सादी भी एक काफिले के साथ हो लिये। उनकी घर पर जो माल श्रसवाव था वह सब उन्हों ने मित्रों और गरीबों की भेंट कर दिया। केवल एक 'कुरान,' जो उनको उनके श्रादि गुरु ने दी थी, अपने पास रख ली। इससे विदित होता है कि वह कैसे त्यागी और साहसी पुरुष थे। मार्ग में वीमार पड जाने के कारण उनका साथ काफिले वालीं से हट गया। लेकिन वह अकेले ही चल खड़े हुए। जिस गांव में वह ठहरे थे वहां लोगों ने समका था कि आगे का मार्ग बहुत विकट है, किन्तु सादी के पास क्या रक्ता था कि वह चोरों से डरते। थोड़ी ही दूर गये थे कि डाङ्ग्जों से उनका सामना हो गया। सादी ने उन से विनयपूर्वक कहा कि मैं गरीव विद्यार्थी हूं, विद्योगार्जन के लिए बुगुदाद जा रहा हूं, मेरे पास शरीर पर के कपड़ों और इस कुरान के सिवाय और कुछ

नहीं है। यदि तुम्हारा जी चाहे तो इन वस्तुओं को लेजात्रो, लेकिन कृपा करके इनका दुरुपयोग मत करना ; किसी गरीव विद्यार्थी को दे देना। सादी के इस कथन का यह असर हुआ कि डाकू लिजित हो गये श्रोर सदैव के लिए उन्होंने इस कुमार्ग को छोड़ने का संकरप कर लिया। उनमें से दो आदमी सादी की रज्ञा के लिए साथ चले। सद्ब्यवहार में कितना प्रभाव है, यह इस घटना से भली भांति प्रमाणित होजाता है। लेकिन ईश्वर को स्वोकार था कि इस यात्रा में सादी को ईश्वरीय न्याय श्रौर दराड का श्रनुभव हो जाय। उसके दोनों साथियों में से एक को तो सांप ने काट खाया श्रौर दूसरा एक पेड़ पर से गिर कर मर गया। दोनों ने बड़े कष्ट से पड़ियां रगड़ कर जान दी। उनके जीवन के इस दुष्परिणाम ने सादी के हृद्य पर गहरा श्रसर डाला और उसने निश्चय कर लिया कि कभी किसी को कष्ट न दूंगा और यथासाध्य दूसरों के साथ दया का व्यवहार करूंगा।

बुगदाद उस समय तुर्क साम्राज्य की राजधानी था। मुसलमानों ने बसरा से लेकर यूनान तक विजय प्राप्त कर ली थी और सम्पूर्ण पशिया ही में नहीं, यूरुप में भी उनका सा वैभवशाली और कोई राज्य नहीं था। इसी समृद्धिशाली राज्य का निवासस्थान था। राजा विक्रमादित्य के समय में उज्जैन की और मौर्य्यवंश के राज्य-काल में पाटलिपुत्र की जो उन्नति थी वहीं इस समय वुगृदाद्की थी । वुगृदाद् के वादशाह ख़लीफ़ा कहलाते थे। रीनक और आवादी में यह शहर शीराज़ से कहीं चढ़ वढ़ कर था। यहां के कई ख़लीफ़ा बड़े विद्याप्रेमी थे। उन्होंने सैकड़ों विद्यालय स्थापित किये थे। दूर दूर से विद्वान् लोग पठन-पाठन के निमित्त श्राया करते थे। यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि युग्दाद का सा उन्नत नगर उस समय संसार में नहीं था। यह वडे श्रालिम, फाज़िल, मौलवी, मुल्ला, विज्ञानवेत्ता श्रौर दार्शनि-कों ने जिनकी रचनायें आज भी गौरव की दृष्टिसे देखी जाती हैं दुग़दाद ही के विद्यालयों में शिक्षा पाई । विशेषतः "मदरसा निजामियां" वर्तमान श्राक्सफोर्ड या वर्लिन की युनिवर्सिटियों से किसी तरह कम न था। सात ब्राठ सहस् ब्रात्र उसमें शिकालाभ करते थे। उसके श्रव्यापकों और श्रविष्टाताओं में ऐसे ऐसे लोग होगये हैं जिनके नाम पर मुसलमानों को आज भी गर्व है। इस मद्रसं की वृत्तियाद एक ऐसे विद्याप्रेमी ने डाली थी जिसके शिकाप्रेम के सामने कारनेगी भी शायट लिक्कत हो आयं। उसका नाम 'निज़ामुलमुल्कतूसी' था। 'जलालुद्दीन सलजूकी' के समय में वह राज्य का प्रधान मन्त्री था। उसने युगदाद के अतिरिक्त वसरा, नेशापुर, इसफहान श्रादि नगरों में भो विद्यालय स्थापित किये थे। राज्यकोष के श्रतिरिक्त श्रपने निज के ग्रसंख्य रुपये शिचोन्नति में ज्यय किया करता था।

'निज़ामियां' मदरसे की ख्यांति दूर दूर तक फैली हुई थी। सादी ने इसी मदरसे में प्रवेश किया। यह निश्चय नहीं है कि वह कितने दिनों नुगदाद में रहा। लेकिन उसके लेखों से झात होता है कि वहां 'फ़िक़ह, हदीस आदि के अतिरिक्त उसने विझान, गणित, खगोल, भूगोल, इतिहास आदि विषयों का अच्छी तरह अध्ययन किया और "अल्लामा" की सनद आप्त की। इतने गहन विषयों में सिद्धहस्त होने के लिए सादी को १० वर्षों से कम न लगे होंगे।

काल की गति विचित्र है। सादी ने बुगृदाद से जब प्रस्थान किया तो उस समय उस नगर पर लक्ष्मी श्रीर सरस्वती दोनों ही की कृपा थी। लेकिन लगभग पचास वर्ष के पश्चात् उसने उसी समृद्धिशाली नगर को हलाकू खां के हाथों नष्टमूष्ट होते देखा श्रीर श्रन्तिम् ख़लीफ़ा जिसके दर्वार में बड़े वड़े राजा श्रीर पर्दसों की भी मुश्किल से पहुंच होती थी बड़े श्रपमान श्रीर क्रूरता के साथ मारा गया।

सादी के हृदय पर इस घोर विग्नव का ऐसा प्रमाव पड़ा कि उसने अपने लेखों में बारम्वार राजाओं को नीति की रत्ता, प्रजापालन, तथा न्यायपरता का उपदेश दिया है। उसका विचार था, और उसके यथार्थ

<sup>&</sup>quot; फ़िक़ह — धर्मशास्त्र । हदीस — पुराख ।

#### ( १३ )

होने में कोई सन्देह नहीं, कि न्यायिष्य, प्रजाभक राजा को कोई शत्रु पराजित नहीं कर सक्ता। जब इन गुणों में कोई श्रंश कम होजाता है तभी उसे बुरे दिन देखने पड़ते हैं। सादी ने दीनों पर दया, दुःखियों से सहातु-भूति, देश भाइयों से प्रेम श्रादि गुणों का बड़ा महत्व दर्शाया है। कोई श्राश्चर्य नहीं कि उसके उपदेशों में जो सजीवता देख पड़ती है वह इन्हीं हृद्यविद्दारक दृश्यों से उत्पन्न हुई हो।



## तीसरा ऋधाय

### देश-भूमण

**a** 

स्त्तमान यात्रियों में "इध्नवत्ता सव से श्रेष्ट समभा जाता है। सादी के विषय में विद्वानों ने स्थिर किया है कि उसकी यात्रायें 'वत्ता' से कुछही कम थीं। उस समय के सभ्य संसार में ऐसा कोई

स्थान न था जहाँ सादी ने पदार्पण् न किया हो। वह सदैव पैदल सफर किया करते थे। इससे विदित हो सक्ता है कि उनका स्वास्थ्य कैसा अच्छा रहा होगा।साथही वह कितने परिश्रमी थे।साधारण् वस्त्रों के अतिरिक्त वह अपने साथ कोई सामान न रखते थे। हाँ, रज्ञा के लिए एक कुल्हाड़ी लेलिया करते थे। आज कल के यात्रियों की माँति पाकेट में नोट वुक दावकर गाइड (पथदर्शक) के साथ प्रसिद्ध स्थानों का देखना और घर पहुंचकर अपनी यात्रा का वृत्तान्त खुपवाकर अपनी विद्वत्ता दर्शाना सादी का उद्देश्य न था। वह जहाँ जाते थे महीनों रहते थे। जन-

<sup>&</sup>quot;इञ्चवतृता प्रख्यात यात्रीथा । उसका ग्रंथ सफ्रानामा महत्वका है ।

समदाय के रीतिरिवाज रहनसहन और आचारव्यवहार को देखते थे। बिद्वानोंका सत्संग करते थे और जो बिचित्रवाने देखते थे उन्हें अपने स्मरण-कोप में संग्रह करते जाते थे। उनकी गुलिस्ताँ श्रोर बोस्ताँ दोनां ही पस्तकें इन्हीं श्रम-भयों के फल हैं। लेकिन उन्हों ने विचित्र जीव-जन्तश्रां. या प्रकृतिक दृष्यों, श्रथवा श्रद्भत वस्त्राभूपणों के गणोड़ों से श्रपनी कितावं नहीं भरीं। उनकी दिण्ट सहैव ऐसी वातों पर रहा करती थी कि जिनसे कोई सदाचार-सम्बन्धी परिलाम हो सक्ता हो, जिनसे मनोवेग और बत्तियां का ज्ञान हो. जिनसे मनुष्य की सज्जनता या दुर्जनता मकट हो। सदाचरण, पारस्परिक व्यवहार, श्रीर नीति-पालन, उनके उपदेशों के विषय थे। वह ऐसी ही घट-नाओं पर विचार करते थे जिनसे इस उच उद्देशकी पूर्ति हो। यह आवश्यक नहीं था कि घटनायें अद्भेत ही हों। नहीं, वह साधारण वार्ता से भी ऐसे सिद्धान्त निकाल लेते थे जो साधारण युद्धि की पहुंच से वाहर होते थे। निम्निलिखित दो चार उदाहरणों से उनकी यह सूच्म-दर्शिता स्पष्ट हो जायगी।

(१) मुर्फे 'केश' नामी द्वीप में एक सौदागर से मिलने का संयोग हुआ। उसके पास सामान से लदे हुये १५० ऊंट, और ४० ज़िदमतगार थे। उसने मुक्ते अपना अतिथि वनाया। सारी रात अपनी राम-कहानी सुनाता रहा कि मेरा इतना माल तुर्किस्तान में पड़ा है, इतना हिन्दुस्तान में, इतनी भूमि अमुक स्थान पर है, इतने मकान अमुक स्थान पर, कभी कहता मुक्ते मिश्र जाने का शौक है लेकिन वहां की जलवायु हानिकारक है। जनाव शेख साहेब, मेरा विचार एक श्रीर यात्रा करने का है, अगर वह पूरी हो जाय तो फिर एकान्तवास करने लगूं। मैंने पूछा कि वह कौनसी यात्रा है ? तो श्राप वोले कि पारस का गन्धक चीन देश में लेजाना चाहता हूं, क्योंकि सुना है कि वहां इसके अच्छे दाम खड़े होते हैं, और चीन के प्याले रूम लेजाना चाहता हूं। वहां से रूम का · \*देवा' लेकर हिन्दुस्तान में, श्रौर हिन्दुस्तान की फौलाद 'हलव' में और हलव का आईना 'यमन' में, श्रोर यमन की चादरें लेकर पारस लोट जाऊंगा। फिर चुपकेसे एक दूकान कर ल्गा और सफ़र छोड़ दूंगा श्रागे ईश्वर मालिक है। उसकी यह तृष्णा देख कर मैं उकता गया श्रीर वोला:--

" श्रापने छुना होगा कि 'गोर' का एक बहुत बड़ा सौदागर जब घोड़े से गिर कर मरने लगा तो उसने एक ठंडी सांस लेकर कहा कि तृष्णावान मनुष्य की इन दो श्रांकों को या तो सन्तोप भर सका है या कृत्र की मिट्टी।"

<sup>\*</sup> एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा।

(२) कोई थका मांदा भूख का मारा वटोही एक धनवान झादमी के घर पर जा निकला। वहाँ उस समय झामोद-अमोद की वार्त हो रही थीं। किन्तु उस बेचारे को उन में करा भी मज़ा न आता था। अन्त में गृह के खामी ने कहा जनाव, कुंछ आप भी कहिये। 'सुसाफ़िर ने जवाव दिया, मेरा भूख से बुरां डाल है।' खामीने लौंडी से कहा, खाना ला। लौंडी ने दस्तरज़्वान विद्या कर खाना रक्खा। लेकिन अभी सत्र चीज़ें तैयार न थीं। खामी ने कहा, कृपा कर ज्रा टहर जाहये अभी कोफ़ता तैयार नहीं है। इसपर मुसाफ़िर ने यह शेर पढ़ा —

"कोफ़ता दर सफ़रये मागो सुवाश, कोफ़ता रा नान-तिही कोफ़तास्त।"

भावार्थ-मुझे \*कोफ़ता की ज़रुरत नहीं है। भूखें आदमी को ख़ाली रोटी ही कोफ़ता है।

(३) एक समय में मित्रों और वन्धुओं से उकता कर किलस्तीन के जंगल में रहने लगा। लेकिन एक दिन ईसाइयों ने मुस्ते क़ैद कर लिया। उस समय मुसलमार्गे और ईसाइयों में लड़ाई हो रही थी। मुस्ते भी खाई खोदने के काम पर लगा दिया। कुछ दिनों के एफ्यात् वहां हलददेश का एक धनाळ्य मनुष्य आया,

<sup>्</sup>र एक प्रकार का व्यंजन ।

जो मुभे पहचानता था। उसे मुभ पर दया आई। वह १० र दीनार देकर मुभे केंद्र से छुड़ा कर अपने. घर लेगया और कुछ दिनों के बाद अपनी लड़की से मेरा. निकाह कर दिया। वह स्त्री दुष्टा थी। मेरा. आदर-सत्कार तो क्या करती, एक दिन कुछ होकर बोली "वर्षो साहैब, तुम वही हो ना जिसे मेरे पिताः ने १० दीनार पर ख़रीदा था।" मैं ने कहा, "भी हां, मैं वही लाभकारी वस्तु हूं जिसे आपके पिता ने १० दीनार पर ख़रीदा थर १०० दीनार पर वंच दिया।" यह यही मसल हुई कि एक धमान्मा पुरुष किसी बकरी को मेंडिये के पंजे से छुड़ा लाया। लेकिन रात को वही बकरी उसने सुद वध करडाली।

(४) मुक्ते एक वार कई फ़क़ीर साथ सफ़र करते हुए मिले । मैं अकेला था। उनसे कहा कि मुक्ते भी साथ ले चिलये । उन्होंने स्वीकार न किया। मैंने कहा कि यह कवाई साधुओं को शोभा नहीं देती। तव उन्होंने जवाय दिया, नाराज़ होने की वात नहीं, कुछ दिन हुये एक बटोही इसी तरह हमारे साथ हो लिया था। एक दिन एक किले के नीचे हम लोग ठहरे। उस मुसाफ़िर ने आधी रात को हमारा लोटा उठाया कि लघुशंका करने जाता हूं। लेकिन सुद ग़ायब हो गया। यहांतक भी कुमल थी। लेकिन उसने फ़िले में

एक सोने का सिक्का जो लगभग २४) के बराबर होता है।

जाकर हुन्नु जवाहरात चुराये श्रीर खिसक गया। प्रातःकाल किले बालों ने हमको पकड़ा। यहुत खोज के पीन्ने जब उस दुग्न का पता मिला तब जाकर हम लोग केंद्र से मुक्त हुए। इस लिए हम लोगों ने प्रण् कर लिया है कि किसी श्रनजान श्रादमी को श्रपने साथ न लेंगे।

- (५) हो खुरासानी फुक़ीर साथ साथ सफ़र कर रहे थे। उन में एक तो बुड्डा था जो दो दिन के वाद खाना खाता था। दूसरा जन्नान था जो दिन में तीन चार भाजन पर हाथ फेरता था। संयोग से दोनों किसी शहर में जास्सी के भूम में पकड़ गवे। उन्हें एक कोउनी में बन्द करके दीबार चुनवा दी गई। दों सप्ताह के बाद मालूम हुआ कि दोनों निरपराध हैं। इस लिए बादशाह ने आजा दी कि उन्हें छोड़ दिया जाय। जब कोटरी की दीवार तोडी गई तो देखा गया कि जवान तो मरा पड़ा है और बढ़ा जीवित है। इस पर लोग. वड़ा कौन्हल करने लगे। इतने में एक वृद्धिमान पुरुष उथर से आ निकला। उसने कहा यह तो कोई श्रारचर्च्य का विषय नहीं, यदि इसके विषरीत हो तो आश्चर्यकी बात थी।
  - (६) एक साल हाजियों के काफिले में फूट पड़ गई। में भी साथ ही यात्रा कर रहा था। हमने खुर लड़ाह्यों कीं। एक ऊटबान ने हमारी यह दशा

देख कर श्रपनें साथी से कहा, खेद की बात है कि शतरंज के प्यादें तो जब मैदान पार कर लेते हैं तो वज़ीर बन जाते हैं, तो वज़ीर बन जाते हैं, मगर हाजी प्यादे ज्यों ज्यों श्रागे बढ़ते हैं, पहले से भी ख़राव होते जाते हैं। इनसे कहो, तुम क्या हज करोगे जो यों एक दूसरे को काटेखाते हो। हाजी तो तुम्हारे ऊंट हैं जो कांटे खाते हैं श्रीर बोक भी उठाते हैं।

- (७) इस में में एक साधु महात्मा की प्रशंसा सुन कर उनसे मिलने गया। उन्होंने हमारा विशेष स्वागत किया किन्तु खाना न खिलाया। रात को वह तो अपनी माला फेरतेरहे और हमें भूख से नींद न आई। सुबह हुई तो उन्हों ने फिर वही कल का सा आगत-स्वागत आरम्भ किया। इस पर हमारे एक मुंहफट मित्र ने कहा "महाशय अतिथि के लिए इस सत्कार से अधिक भोजन की ज़करत है। मला ऐसी उपासना से कब उपकार होसका है जब कई आदमी भूख के मारे करवटें बदलते रहें।"
- (म) एक बार मैंने एक मनुष्य को तेंदुए पर सवार देखा। मय से कांपने लगा। उसने यह देखकर इसते हुए कहा, सादी, डरता क्यों है, यह कोई आश्चर्य्य की बात नहीं। यदि मनुष्य ईश्वर की आझा से मुंह न मोड़े तो उसकी श्राहा से भी कोई मुंह नहीं मोड़ सका।

(६) सादी ने भारत की यात्रा भी की थी। कुछ विद्वानों का श्रनुमान है कि वह चार वार हिन्दुस्तान श्राये, परन्तु इसका कोई प्रमाण नहीं। हां, उनका एक वेर यहां आना निर्मान्त है। वह गुजरात तक आये और शायद वहीं से लौट गये। सोमनाथ के विषय में उन्होंने एक घटना लिखी है जो शायद सादी की यात्राष्ट्रतान्त में सब से श्रधिक कौत्हल-जनक है। वे लिखते हैं कि जब मैं सोमनाथ पहुंचा तो देखा कि सहस्म स्त्री-पुरुष मन्दिर के द्वार पर खड़े हैं श्रीर उनमें कितने ही मुरादें मांगने के लिए दूर दूर से आये हैं। नुभे उनकी मुर्खता पर खेद हुआ। एक दिन मैंने कई आद्मियों के सामने मृर्तिपूजा की निन्दा की। इस पर मन्दिर के बहुत से पुजारी जमा होगये, और मुभे घेर लिया। मैं उरा कि कहीं यह लोग मुभे पीटने न लगें। मैं बोला, कि मैंने कोई बात श्रश्रुद्धा से नहीं कही। मैं तो खुद इस मृतिंपर मोहित हूं लेकिन मैं श्रमी यहां के गुत-रहस्यों को नहीं जानता इसलिए चाहता हूं कि इस तत्व का पूर्ण-ज्ञान प्राप्त करके उपासक वन्। पुजारियों को मेरी यह वार्ते पसन्द श्राई उन्होंने कहा आज रात को तू मन्दिर में रह। तेरे सव भूम मिट जायंगे। मैं रात भर वहां रहा। प्रातःकाल जब नगरवासी वहां एकत्रित हुए तो उस मूर्ति ने अपने हाथ उठाये जैसे कोई प्रार्थना कर रहा हो। यह देखते ही सब लोग जय जय पुकारने लगे। जब लोग चलें गये तो पुजारी ने हंस कर मुक्तले कहा क्यों अब तो कोई शंका नहीं रही? मैं कित्रम-माब चना कर रोने लगा और लजा प्रगट कीं। पुजारियों को मुक्त पर विश्वास होगया। मैं कुछ दिनों के लिए उनमें मिल गया। जब मन्दिरवालों का मुक्त पर विश्वास होगया। मैं कुछ दिनों के लिए उनमें मिल गया। जब मन्दिरवालों का मुक्त पर विश्वास जम गया तो एक रात को अवसर पाकर मैंने मन्दिर का द्वार वन्द कर दिया और मृतिं के सिंहासन के निकटं जाकर ध्यान से देखने लगा। वहां मुक्ते एक परदा दिखाई पड़ा जिसके पीछे एक पुजारी बैठा हुआ था। उसके हाथ में एक डोर थी। मुक्ते मालूम हो गया कि जब यह उस डोरे को खींचता है तो मूर्ति का हाथ उठ जाता है। इसी को लोग दैविक बात समक्तते हैं।

यद्यपि सादी मिथ्यावादी नहीं थे तथापि इस चुत्तान्त में कई बातें पेसी हैं जो तर्क की कसोटी पर नहीं कसी जा सकीं। लेकिन इतना मानने में कोई आ-पत्ति न होनी चाहिये कि सादी गुजरात आये और सोम-नाथ में ठहरे थे।



## चेधि हस्याय

### सादी का शीराज में पुनरागमन

💭 🚅 स चालीस साल तक अमण करने के वाद सादी को जन्मसूमि का स्मरण हुआ। जिस समय वह शीराज़ से चले थे, चहाँ अशान्ति कैली हुई थी। कुछू तो इस कुद्शा, श्रौर कुछ विद्यालय की इच्छा से प्रेरित होकर सादी ने देशत्याग किया था। लेकिन श्रव शीराज् की वह इशा न थी। साद विन जंगी की मृत्यु होचुकी थी और उसका येटा अतावक अयूवक राज्यगद्दी पर था। यह एक न्यायिवय, राज्य-कार्य्य-कुशल राजा था। उसके सुशासन ने देश की विगड़ी हुई श्रवस्था को बहुत कुछ सुधार दिया था। सादी संसार को खूद देख चुके थे। अवस्था भी वह त्रा पहुंची थी जब मनुष्य को एकान्तवास की इच्छा होने लगती है, और सांसारिक कगड़ों से मन उदासीन होजाता है । श्रतएव श्रनुमान कहता है कि ६५ या ७० वर्ष की अवस्था में सादी शीराज आये। यहाँ समाज और राजा दोनों ही ने उनका उचित आदर किया। लेकिन सादी अधिकतर एकान्तवास ही में रहते थे। राजदरवार में वहुत कम आते जाते। समाध से भी

किनारे रहते। इसका कदाचित् एक कारण यह भी था कि अतावक अववक को मुल्लाओं और विद्वानों से कुछ चिद्व थी । वह उन्हें पालएडी श्रीर उपद्रवी समझता था। कितने ही सर्वमान्य विद्वानों को उसने देश से निकाल दिया था। इसके विपरीत वह मूर्ख फ़क़ीरों की वहुत सेवा और सत्कार करता। जितना ही श्रपढ़ फ़क़ीर होता उतना ही उसका मान श्रधिक करता था। सादी विद्वान भी थे, मुल्ला भी थे, यदि वह प्रजा से मिलते-जुलते तो उनका गौरव श्रवश्य बढ़ता श्रौर बाद-शाह को उनसे खटका होजाता। इसके सिवा यदि वह राजदरबार के उपासक बनजाते तो विद्वान लोग उन पर कटाज्ञ करते । इस लिए सादी ने दोनों से मुँह मोड़ने ही में अपना कल्याण समका, और तटस्थ रहकर दोनों के कृपापात्र बने रहे। उन्हों ने गुलिस्ताँ श्रीर वोस्ताँ की रचना शीराज ही में की, दोनों प्रन्थों में सादी ने यूर्ख साधु, फ़क़ीरों की खूब ख़बर ली है, और राजा, बादशाहों को भी न्याय, धर्म और दया का उपदेश किया है। अन्ध-विश्वास पर सैकड़ों जगह मार्मिक चोटें की हैं। इनका तात्पर्य्य यही था कि श्रतावक श्रव्वक सचेत हो जाय श्रीर विद्वानों से द्रोह करना छोड़ दे। सादी को बादशाह की अपेता युवराज से अधिक स्नेह था। इसका नाम फ़लकदीन था। वह बुग़दाद के ख़लीफ़ा के पास कुछ तुहफ़े भेंट लेकर मिलने गया था। लौटती वार मार्ग ही में उसे अपने पिता के मरने का समाचार

मिला। युवराज बड़ा पितृभक्त था। यह ख़बर खुनते ही वह शोक से बीमार पड़गया और रास्ते ही में परलोक को सिधार गया। इन दोनों मृत्युओं से सादी को इतना शोक हुआ कि वह शीराज़ से फिर निकल खड़े हुए और यहुत दिनों तक देशभ्रमण करते रहे। मालूम होता है कि कुछ काल के उपरान्त वह फिर शीराज़ आ गये थे, क्वींकि उनका देहान्त यहीं हुआ। उनकी कृष्ट अभी तक मौजूद है, लोग उसकी पूजा (ज़ियारत) करने जाया करते हैं। लेकिन उनकी सन्तानों का कुछ हाल नहीं मिलता है.। सम्मवतः सादी की मृत्यु १२== ई० के लगभग हुई। उस समय उनकी अवस्था ११६ वर्ष की थी। शायद ही किसी साहित्यसेवी ने इतनी बड़ी उम् पाई हो।

सादी के प्रेमियों में अलाउद्दीन नाम का एक वड़ा उदार व्यक्ति था । जिन दिनों युवराज फ़ज़रुद्दीन की मृत्यु के पींड्रे सादी बुग़दाद श्राये तो अलाउद्दीन वहाँ के सुल्तान अवाका ख़ाँ का वज़ीर था । एक दिन मार्ग में सादी से उसकी मेंट हो गई। उसने वड़ा आदर-सत्कार किया। उस समय से अन्त तक वह वड़ी भक्ति से सादी की सेवा करता रहा। उसके दियेड्डए धन से सादी अपने व्यय के लिए थोड़ा सा लेकर शेष दीनों को दान कर दिया करते थे। एक बार ऐसा हुआ कि अला-उद्दीन ने अपने एंक गुलाम के हाथ सादी के पास ५०० दीनार मेजे। गुलाम जानता था कि शेख़साहब कभी किसी चीज को गिनते तो हैं नहीं, अतएव उसने धूर्ततः से १५० दोनार निकाल लिये। सादी ने भन्यपाद में एक कियता लिखकर भेजी, उसमें ३५० दीनारों का ही ज़िक था। अलाउदीन वहुत लिजत हुआ, गुलाम को दगड दिया और अपने एक मित्र को जो शीराज़ में किसी उच्च पद पर नियुक्त था लिखमेजा कि सादी को १० हज़ार दीनार दे दो। लेकिन इस पत्र के पहुंचने से २ दिन पहले ही उनके यह मित्र परलोक सिधार चुके थे, रुपये कौन देता? इसके बाद अलाउदीन ने अपने एक परमविश्वस्त ममुख्य के हाथ सादी के पास ५० हज़ार दीनार भेजे। इस धन से सादी ने एक धर्मशाला बनवादी। मरते समय तक शेंख़ सादी इसी धर्मशाला में निवास करते रहे। उसी में अब उनकी समाधि है।



## पांचवां ऋध्याय

### मादी की रचनायें और उनका महत्व

ही के रचित प्रन्थों की संख्या १५ से श्रियक है। इनमें ४ प्रन्थ केवल गृज़लों के हैं। एक दो प्रन्थों में वह क़सीदे दर्ज हैं जो है। उन्होंने समय समय पर वादशाहों या वज़ीरों की प्रशंसा में लिखे थे। इन में एक श्ररवी भाषा

में हैं। दो ब्रन्ध भक्तिमार्ग पर लिखे गये हैं। यद्यपि उनकी समस्त रचनाश्रों में मौलिकता श्रोज विद्यमान है, यहाँतक कि कितने ही बड़े बड़े कवियों ने उन्हें गुज़लों का बादशाह माना है। लेकिन सादी की ख्याति और कीर्त्ति विशेषतः उनकी गुल्लिस्ताँ और वोस्ताँ पर निर्भर है। सादी ने सदाचार का उपदेश करने के लिए जन्म लिया था और उनके कुसीट्रां श्रीर गृजुलां में भी यही प्रधान गुण है। उन्हों ने क़सीदों में भाटपना नहीं किया है, भूठी तारीफ़ी के पुल नहीं बांधे हैं। गृज़लों में भी हिज़ और विसाल जुल्फ़ श्रीर कंमर, के दुखड़े नहीं रोये हैं। कहीं भी सदाचार को नहीं छोड़ा। तो फिर गुलिस्ताँ और वोस्ताँ का कहना ही क्या ? इनकी तो रचना ही उपदेश के निमित्त हुई थी। इन दोनों ब्रन्थों को फ़ारसो साहित्य का सुर्य्य और

चन्द्र कहें तो अत्युक्ति न होगी। उपदेश का विषय बहुत
शुष्क समभा जाता है, और उपदेशक तो सदैव से अपनी
कड़वी, और नीरस बातों के लिए बदनाम रहते हैं।
नसीहत किसी को अच्छी नहीं लगती। इसीलिए विद्वानों
ने इस कड़वी औपधि को भांति भांति के मीठे शर्वतों के
साथ पिलाने की चेष्टा की है। कोई चील-कौवे की
कहानियां गढ़ता है, कोई किएत कथायें नमक मिर्च
लगाकर बखान करता है। लेकिन सादी ने इस दुस्तरकार्य्य को इतनी विलक्षण दुशलता और वुद्धिमचा से पूरा
किया है कि उनका उपदेश काव्य से भी अधिक सरस
और सुवोध हो गया है। देसा चतुर उपदेशक कदाचित्
ही किसी दूसरे देश में उतपन्न हुआ हो।

सादी का सर्वोत्तम गुण वह वाक्यनिपुणता है, जो सामाविक होती है और उद्योग से माप्त नहीं हो सकी। वह जिस वात को लेते हैं उसे ऐसे उत्कृष्ट और भाव-पूर्ण गुरूरों में वर्णन करते हैं कि जो अन्य किसी के ध्यान में भो नहीं आ सके। उनमें कराल करने की शको के साथ साथ ऐसी मार्मिकता होती है कि पढ़नेवाले मुग्ध हो जाते हैं। उदाहरण की मांति इस वात को कि ऐट पापी है, इसके कारण मनुष्य को बड़ी कि निहार्यों भेलनी पड़ती हैं, वह इस प्रकार वर्णन करते हैं:—

" अगर जौरे शिकम न ब्दे, हेच मुर्ग दर दाम न उफ़तादे, बल्कि सैयाद खुद दाम न निहादे।" भावं —यदि पेट की चिन्ता न होती तो कोई चिड़िया जाल में न फँसती, बल्कि कोई बहेलिया जाल ही न विद्याता।

इसी तरह इस बात को कि न्यायाधीश भी रिश्वत से बश में हो जाते हैं, वह यो बयान करते हैं :-

> " हमा कत्त रा दन्दाँ चतुर्शी कुन्द् गरदद, मगर क़ाज़ियाँ रा वशीरीनी। "

ं भाव-श्रम्य मनुष्यों के दाँत खटाई से गुटुल हो जाते हैं लेकिन न्यायकारियों के मिठाई से।

उनको यह लिखना था कि भीख माँगना जो एक निन्य कर्म है उसका प्रपराध केवल फुक़ीरों ही पर नहीं विक्त अमीरों पर भी है, इसको वह इस तरह लिखते हैं:—

> " अनर शुमा रा इन्साफ़ व्दे व मारा कनाश्रत, रस्मे सवाल श्रज़ जहान वरखास्ते। "

भाव-यदि तुम में न्याय होता श्रौर हममें सन्तोप, तो संसार में माँगने को प्रथा ही उठजाती।

इन दोनों प्रन्थों का दूसरा गुण उनकी सरलता है।

यद्यपि इन में एक वाक्य भी नीरस नहीं है, किन्त भाषा पेसी मधर और सरल है कि उस पर आशचर्य होता है। साधारण लेखक जब सजोली भाषा लिखने की चेप्रा करता है तो उस में कत्रिमता आजाती है लेकिन सादी ने सादगी और सजावट का ऐसा मिश्रण कर दिया है कि श्राज तक किसी अन्य लेखक को उस शेली के अनकरण करने का साहस न हुआ, श्रोर जिन्हों ने साहस किया. उन्हें मेंह की खानी पड़ी। जिस समय गलिस्ताँ की रचना हुई उस समय फारसी भाषा अपनी बाल्यावस्था में थी। पद्य का तो प्रचार हो गया था लेकिन गद्य का प्रचार केवल वात-चीत, हाट-वाज़ार में था। इस लिए सादी को अपना मार्ग आप बनाना था। वह फारस्क्री गद्य के जन्मदाता थे। यह उनकी श्रद्धत प्रतिभा है कि श्राज ६०० वर्ष के उपरान्त भी उनकी भाषा सर्वोत्तम समभी जाती है। उनके पीछे कितनी ही पुस्तकें गद्य में लिखी गई, लेकिन उनकी भाषा को पुरानी होने का कलँक लग गया। गुलिस्ताँ जिसकी रचना श्रादि में हुई थी श्राज भी फ़ारसी भाषा का शृंगार समभी जाती है। उसकी भाषा पर समय का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा।

साहित्यसंसार में कविवर्ग में ऐसा यहुत कम देखने में आता हैं कि एक ही विषय पर गद्य और पख के दो अन्थों में गद्य रचना अधिक अष्ट हो। किन्तु सादी ने यही करदिखाया है। गुलिस्ताँ और वोस्ताँ दोनों में नीति का

विषय लिया गया है। लेकिन जो आदर और प्रचार गुलिस्ताँ का है वह बोस्ताँ का नहीं। बोस्ताँ के जोड की कई किनावें फारसी भाषा में वर्तमान हैं। "मसनवी †सिकन्दरनामा ग्राँर İशाहनामा यह तीनों ग्रन्थ उचकोटि के हैं और उनमें यद्यपि शब्दयोजना. काव्यसौन्दर्य, अलङ्कार, श्रीर वर्णनशक्ति वोस्ताँ से अधिक है तथापि उनकी सरलता, और उसकी गुप्त च्टिकयाँ और युक्तियाँ उनमें नहीं हैं। लेकिन गु-लिस्ताँ के जोड का कोई प्रन्थ फारसी भाषा में है ही नहीं। उसका विषय नया नहीं है। उसके बाद से नीति पर फ़ारसी में सेकड़ों ही फितावें लिखी जा चकी हैं। टिसमें जो कुछ चमत्कार है वह सादी की भाषालालित्य श्रीर बाक्यचानुरी है। उसमें बहुत सी कथायें श्रीर घटनायें स्वयं लेखक ने अनुभव की हैं इसलिए उनमें ऐसी सजीवता श्रौर प्रभावोत्पादकता का संचार हो गया हैं जो केवल श्रद्धभव ही से हो सकता है। सादी पहले एक बहुत साधारण कथा छेड़ते हैं लेकिन अन्त में एक ऐसी चुटीली और मर्मभेदी वात कहदेते हैं कि जिससे सारी कथा अल्ङ्कृत हो जाती है। युरूप के समालोचकों ने

<sup>&#</sup>x27;मीजाना जलालुंडीन का महाकाव्य, भक्ति के विषय में । †निज़ामी का काव्य, सिकन्दर वादशाह के चरित्र पर । ;फिंग्टोमी का अपूर्व काव्य, ईरान देख के वादशाहों के विषय में, फारसी का महाभारत है ।

सादी की तुलना "'होरेस' से की है। अंग्रेज़ विद्वानों ने उन्हें एशिया के शेक्सपियर की पदवी दी है। इससे विदित होता है कि यूक्ष में भी सादी का कितना आदर है। गुलिस्ताँ का लैटिन, फू आ, जर्मन, उच, अंग्रेज़ी, तुर्की आदि भाषाओं में एक नहीं कई अञ्चवाद हैं। भारतीय भाषाओं में उर्दू, गुजराती, वँगला में उसका अञ्चवाद हो जुका है। हिन्दी भाषा में भी महाशय मेहरचन्द दास का किया हुआ गुलिस्ताँ का गय-पद्यमय अञ्चवाद १८८८ में प्रकाशित हो चुका है। संसार में ऐसे थोड़े ही अन्थ हैं जिनका इतना आदर हुआ हो।

<sup>&</sup>quot;होरेस यूनान का सर्वश्रेष्ट किन माना जाता है।

## हुड्यां प्रध्याय

## गुलिस्ताँ

िट के हिन्दूर्ग हम गुलिस्ताँ की कुछ कथायें देते हैं
के पिक्कि जिससे हम पाठकों को भी सादी के
किया किया है किया किया है किया है किया किया है कि

[१] गुलिस्ताँ में आठ परिच्छेद हैं।
प्रत्येक परिच्छेद में नीति और सदाचार
के भिन्न भिन्न सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है। अथम
प्रकरण में वादशाहों को आचार, व्यवहार और राजनीति
विषयक उपदेश दिये गये हैं।

सादी ने राजाओं के लिए निम्नलिखित वार्ते बहुत श्रावश्यक श्रीर ध्यान देने योग्य बतलाई हैं:—

- (१) मजा पर कभी स्वयं श्रत्याचार करेन श्रपने कर्मचारियों को करने दें।
- (२) किसी वात का श्रमिमान न करे श्रौर संसार के वेंभव को नश्वर समभतारहै।

(३) प्रजा के धन को अपने भोग-विलास में न उड़ाकर उन्हीं के आराम में खर्च करे।

में दिसिश्क में एक श्रीलिया की कुछ पर बैटा हुआ था कि अरब देश का एक अत्याचारी बादशाह वहां पूजा करने आया। नमाज़ पढ़ने के पश्चात् वह सुक्त से बोला कि में आजकल एक वलवान शत्रु के हाथों तंग आगया हूं। आप मेरे लिए दुआ कीजिये। मैंने कहा कि शत्रु के पंजे से वचने के लिए सब से अञ्झा उपाय यह है कि अपनी दीन मर्जा पर दया कीजिये।

पक अत्याचारी वादशाह ने किसी साधु से पूछा कि मेरे लिए कौन सी उपासना उत्तम है। उत्तर मिला कि तुम्हारे लिए दोपहर तक सोना सब उपासनाओं से उत्तम है; जिस में उतनी देर तुम किसी को सता न सको।

पक दिन खलीफ़ा हाक रशीद का एक शाहजादा क्रोध से भरा हुआ अपने पिता के पास आकर बोला कि मुभे अमुक सिपाही के लड़के ने गाली दी है। बादशाह ने मन्त्रियों से पूछा कि क्या होना चाहिए। किसी ने कहा उसे केंद्र कर दीजिये। कोई बोला जान से मरघा डालिये। इस पर बादशाह ने शाहज़ादे से कहा, वेटा उत्तम तो यह है कि उसे समा करो। यदि इतने उदार नहीं होसके तो उसे भी गाली दे लो।

एक साधु संसार से विरक्त होकर वन में रहने लगा। एक दिन राजा की सवारी उधर से निकली। साधु ने कुछ ध्यान न दिया। तव मन्द्रों ने जाकर उससे कहा साधु जी राजा तुम्हारे सामने से निकले और तुमने उनका कुछ सम्मान न किया। साधु ने कहा भगवन् राजा से कहिए कि नमस्कार-प्रणाम की श्राशा उससे रक्षों जो उन से कुछ चाहता हो। श्रथच राजा प्रजा की रसा के लिए है, न कि प्रजा राजा की बंदगी के लिए।

एक बार न्यायशील नौशरवां जंगल में शिकार खेलने गया। वहां भोजन बनाने के लिए नमक की क़दरत हुई। नौकर को भेजा कि जाकर पासवाले गांव से नमक ले आ। लेकिन बिना दाम दिये मत लाना। नहीं गांव ही उजड़ जायगा। नौकर ने कहा तिनक सा नमक लेने से गांव कैसे उजड़ जायगा? नौशरवां ने उत्तर हिया:—

श्रगर राजा प्रजाके वाग़ से एक सेव खाले तो नौकर लोग उस वृत्त की जड़ तक खोद खाते हैं।

[२] दूसरे मकरण में सादी ने पाखराडी साधुर्यो,
मौलवियों और फ़क़ीरों को शिक्षा दी है। जिन्हें उस
प्राचीन काल में भी इसकी कुछ कम श्रावश्यकता न थी।
सादी को परिडतों, मौलवी-मुह्लाओं के साथ रहने के
बहुत श्रवसर मिले थे। श्रतपव वह उनके रंग-ढंग को
भली भांति जानते थे। इन उपदेशों में वारम्वार समकाया
है कि मौलवियों को सन्तोष रखना चाहिये। उन्हें राजा
रईसों की खुशामद करने की ज़करत नहीं। गेकवे वाने की
आड़ में खार्थ सिद्ध करने की वह श्रत्यन्त घृणा की दृष्टि
से देखते थे। उनके कथनानुसार किसी वने हुए साधु से
भोग-विलास में फँसा हुशा मनुष्य श्रच्छा है क्योंकि वह
किसी को घोखा तो देना नहीं चाहता।

मुसे याद है कि एक वार जब मैं वाल्यावस्था में सारी रात कुरान पढ़ता रहा तो कई आदमी मेरे पास पड़े खरीटे लें रहे थे। मैंने अपने पूज्य पिता से कहा इन सोने वालों को देखिये, निमाज़ पढ़ना तो दूर रहा कोई सिर भी नहीं उठाता। पिता जी ने उत्तर दिया, बेटा, तू भी सो जाता तो अच्छा होता कि इस छिद्रान्वेषण से तो बच जाता। किसी बादशाह ने एक ईश्वर-भक्त से पृद्धा कि कभी बाप मुस्ते भी तो याद करते होंगे। भक्त ने कहा, हाँ, जब ईश्वर को भूल जाता हूं तो ब्राप याद ब्रा जाते हैं।

एक बादशाह ने किसी विपत्ति के अवसर पर निश्चय किया कि यदि यह विपत्ति टल जाय तो इनना धन साधु मन्तां को दान कर दूंगा। जब उसकी कामना पूरी हो गई तो उसने अपने नौकर को रुपयों की एक थेली साधुओं को बाँटने के लिए दी। वह नौकर चतुर था। संध्या को वह थेली ज्या की त्या दर्बार में वापन ने आया और वोला, दीन वन्धु, मैंने बहुन खोज की किन्तु इन रुपयों का लेने वाला कोई न मिला। धादशाह न कहा तुम भी विचित्र आदमी हो, इली शहर में चार नो से अधिक साधु होंगे। नौकर ने विनय की कि भगवन जो सन्त हैं वह तो दृब्य को छूते नहीं और जो माया सक्त हैं उन्हें मैं ने दिया नहीं।

किसी महात्मा से पृत्रा गया कि दान ग्रहण करना ग्राप उचित समभते हैं वा श्रतुचित ? उन्हों ने उत्तर दिया कि यदि उस से किसी साकार्य की पूर्ति हो तब तो उचित हैं, यदि केवल संग्रह श्रौर ब्यापार के निमित्त हो तो श्रत्यन्त श्रतुचित हैं। पक साधु किसी राजा का श्रांतिथि हुआ। जव मोजन का समय आया तो उस ने बहुत श्रद्ध भोजन किया। लेकिन जब नमाज़ का वक्त श्राया तो उसने खूब लंबी नमाज़ पढ़ी। जिस में राजा के मन में श्रद्धा उत्पन्न हो। वहाँ से विदा हो कर घर पर आये तो मूख के मारे बुरा हाल था। आते हो भोजन माँगा। पुत्र ने कहा पिता जी ध्या राजा ने भोजन नहीं दिया। बोले भोजन तो दिया किन्तु में ने स्वयं जान वृक्त कर कुछ नहीं खाया जिस में बादशाह को मेरे योगसाधन पर पूरा विश्वास हो जाय। वेटे ने कहा, तो भोजन करके नमाज़ भी किर से पढ़िये। जिस तरह वहाँ का भोजन आप का पेट नहीं भर सका, वैसे ही वहाँ की नमाज़ भी सिद्ध नहीं हई।

[३] तीसरे प्रकरण में सन्तोष की महिमा वर्णन की गई है। सादी की नीति शिक्षा में सन्तोष का पद् बहुत ऊँचा है। श्रीर यथार्थ भीयही है। सन्तोष सदाचार का मूल मन्त्र है। सन्तोषक्षणी नौका पर वैठ कर हम इस भवसागर को निर्विद्य पार कर सक्ते हैं।

मिश्र देश में एक धनवान मनुष्य के दो पुत्र थे। एक ने विद्या पढ़ी, दूसरे ने धन संचय किया। एक परिडत हुवा, श्रौर दूसरा मिश्र का प्रधान मन्त्री कोषाध्यत्त। इस ने अपने विद्वान् भाता से कहा, देखों मैं राजपद पर पहुंचा ध्रोर तुम ज्यों के न्यों रह गये। उस्तरे उत्तर दिया ईश्वर ने मुक्त पर विशेष इत्ता की हैं, पर्योक्ति मुक्त को विद्या दी जो देव दुर्लभ पदार्थ हैं और तुम को मिश्र की उस गद्दी का मन्त्री बनाया जो "फिरऊन की थी।

हैगन के बादशाह बहमन के सँबन्ध में कहा जाता है कि उसने अरब के एक हकीम से पूछा कि नित्य कितना भोजन करना चाहिये। हकीम ने उत्तर दिया, २८ तोले। बादशाह बोला भला, इतने से प्या होगा। उत्तर मिला, इतने आहार से तुम जिन्दा रह सकते हो। इसके उपरान्त जो कुछ न्वाने हो वह बोक्ष है जो तुम व्यर्थ अपने ऊपर लाइते हो।

एक मनुष्य पर किसी विनये के कुछ रुपये चढ़ गये थे। वह उससे प्रतिदिन माँगा करता श्रीर कड़ी कड़ी वार्त कहता। वेचारा सुन सुन कर दुःखी होता था, सहने के सिना कोई दूसरा उपाय न था। एक चनुर ने यह कौतुक देख कर कहां इच्छाश्रों का टालना इतना कठिन नहीं है जिनना विनयों को। कुसाइयों के तगादे सहने की श्रपेत्वा माँस की श्रीभलापा में मरजाना कहीं श्रच्छा हैं।

<sup>&</sup>quot;मिश्र का एक श्रमिमानी बादशाह था जिसे मृतानवीने नील नदी में दुवादिया।

एक फ़कीर को कोई काम आ पड़ा। लोगों ने कहा अमुक पुरुष वड़ा दयाल है। यदि उससे जा कर अपनी आवश्यकता कहो तो वह तुम्हें कदािप निराश न करेगा। फ़क़ीर पूछते पूछते उस पुरुष के घर पहुंचा। देखा तो वह रोनी सूरत बनाये, कोध में भरा वैठा है। उस्टे पाँव लौट आया। लोगों ने पूछा क्यों भाई क्या हुआ ? वोले सुरत ही देखकर मन भर गया। यदि माँगना ही पड़े तो किसी प्रसन्न चित्त आदमी से मांगो, मनहुस आदमी से न मागना ही अञ्छा है। सुरत ही निराशा-जनक न हो।

लोगों ने \*हातिमताई से पूझा, क्या तुमने संसार में कोई अपने से अधिक प्रतिभाशाली मजुष्य देखा वा सुना है? बोला, हां पक दिन मेंने लोगों की वड़ी भारी दावत की। संयोग से उस दिन किसी कार्य्यव्य मुभे जंगल की तरफ जाना पड़ा। एक लकड़हारे को देखा बोभ लिये आ रहा है। उससे पूझा, भाई, हातिम के महमान क्यों नहीं वन जाते ? आज देश भर के आदमी उसके अतिथि हैं। बोला जो अपनी मेहनत की रोटी खाता है वह हातिम के सामने हाथ क्यों फैलावे?

<sup>&</sup>lt;sup>\*</sup>उदारता में श्ररव का हरिश्चन्द्र है।

कहते हैं कि एक भिचुक ने वहुतसा धन जमा कर रक्खाथा। वहां के वादशाह ने उसे वुला कर कहा, सुना है कि तुम्हारे पास वड़ी सम्पत्ति है। मुभे आजकल द्रव्य की वड़ी आवश्यकता आपड़ी है। यदि उसमें से कुछ दे दो तो कोष में रुपये आतेही में तुम्हें चुका दूंगा। फ़क़ीर ने कहा जहां-पनाह, मुभ जैसे भिखारी का धन आप के काम का नहीं है क्योंकि मैंने मांग मांग कर कौड़ी कौड़ी वटोरी है। वादशाह ने कहा इसकी कुछ चिन्ता नहीं, मैं यह रुपये काफ़िरों, अधर्मियों कोही दूंगा। जैसा धन है वैसा।

एक वृद्ध पुरुष ने एक युवती कन्या से विवाह किया श्रापने कमरे को फूलों से खूव सजाया। उसके साथ एकान्त में वैठा हुआ उसकी सुन्दरता का आनंद उठाया करता। रात भर जागता रहता और रोचक कहानियां कहा करता कि कदाचित् उसके हृदय में कुछ प्रेम उत्पन्न हो जाय। एक दिन उससे वोला तेरा नसीच अच्छा था कि तेरा विवाह मेरे जैसे वृद्धे से हुआ जिसने वहुत ज़माना देखा है, सुख-दुःख का बहुत अनुभव कर चुका है। जो मित्रधर्म का पालन करना जानता है, और जो मृदुभाषी, प्रसन्न चिन्त, और शीलवान है। नहीं तू किसी अभिमानी युवक के पाले पड़ी होती, जो रात दिन सेर सपाटे किया करता, अपने ही बनाव सिंगार में भूला रहता, नित्य नये प्रेम की खोज में रहता, तो तुकसे रोते न बनता। युवक लोग सुन्दर और रिसक होते हैं

किन्तु प्रीति-पालन करना नहीं जानते। वृहे ने समक्षा कि इस भापण ने कामिनी को मोहित कर लिया लेकिन अकस्मात युवती ने एक गहरी साँस ली और वोली "आपने बहुत अच्छी अच्छी बातें कहीं लेकिन उनमें से एक भी सुक्ते इतनी नहीं जचती जितनी मेरी दाई का यह बाक्य कि युवनी को तीर का घाव उतना दुखदाई नहीं होता जितनावृद्ध मनुष्य का सरवास।"

द्यारेवक में में एक वृद्ध धनवान मनुष्य का श्रतिथिः था। उसके एक कपवान पुत्र था। एक दिन उसने कहा "इस लड़के के सिवा मेरे श्रीर कोई सन्तान नहीं हुई। यहां से पासडी एक पित्रत्र वृद्ध है, लोग वहां जाकर , मन्नतें मानते हैं। कितनी ही रातें मैंने उस वृद्ध के नीचें ईश्वर से विनती की, तव मुक्ते यह पुत्र प्राप्त हुआ।" उधर लड़का धीरे धीरे मित्रों से कह रहा था "यदि मुक्ते उस वृद्ध का पता होता तो जा कर ईश्वर से पिता की मृत्यु के लिए विनय करता।"

मेरे मित्रों में एक युवक वड़ा प्रसन्न चित्त, इंस-मुख छौर रसिक था। शोक उसके हृदय में घुसने भी न पाता था। कुछ दिनों तक उस से मिलने का संयोग न हुआ इसके बाद जब मेंट हुई तो देखा कि उसके घर में स्त्री और बचे हैं। साथही न वह पहले की सी मनोरक्षकता है न उत्साह। पूछा क्या हाल है ? वोला, जव वचों का वाप हो गया तो वचों का खिलाड़ीपन कहां से लाऊं ? श्रव-स्थानुकूल ही सव वातें शोभा देती हैं।

एक वार युवावस्था में मैंने अपनी माता से कुछ कठोर वातें कह दीं। याता दुःखी होकर एक कोने में जा बेठी और रो कर कहने लगी, वचपन भूल गया, इसी लिये अब मुंह से ऐसी वातें निकलती हैं।

एक यूढ़े से लोगों ने पूछा विवाह क्यों नहीं करते? यह वोला वृद्धा खियों से मैं विवाह नहीं करना चाहता लोगों ने कहा, तो किसी युवती से व्याह करले। वोला, जव मैं वृढ़ा हो कर यूढ़ी खियों से भागता हूं तो वह युवती हो कर यूढ़े मनुष्य को कैसे चाहेंगी?

[४] चौथा प्रकरण वहुत छोटा है और उसमें मितभाषी होने का जो उपदेश किया गया है उसकी सभी वातों से आजकल के शिच्चित लोग सहमत न होंगे, जिनका सिद्धान्त ही है कि अपनी राई भर बुद्धि को पर्वत बनाकर दिखाया जाय। आजकल विनय अयोग्यता की द्योतक समभी जाती है और वहीं मनुष्य चलते-पुरज़े और

में गुवावस्था दूसरे में वृद्धावस्था का। गुवावस्था में हमारी
मनोवृत्तियां कैसी होती हैं, हमारे क्या कर्तव्य होते हैं, हम
वासनाओं में किस प्रकार लिप्त हो जाते हैं वृद्धापे में हमें
क्या श्रद्धमव होते हैं, मन में क्या श्रमिलाषायें रहती हैं
हमारे क्या कर्तव्य होने चाहियें। इन सब विषयों को सादी ने
इस तरह वर्णन किया है मानों वह भी सदाचार के श्रक्क हैं।
इस में कितनी ही कथायें ऐसी हैं कि जिनसे मनोरक्षन के
सिवा कोई नतीजा नहीं निकलता, वरन कुछ कथायें ऐसी
भी हैं जिन को गुलिस्ताँ जैसे प्रन्थ में स्थान न मिलना
चाहिये था। विशेषतः युवावस्था का वर्णन करते हुए तो
ऐसा मालूम होता है मानो सादी को जवानी का नशा चढ़

[७] सातवां प्रकरण शिक्षा से सम्बन्ध रखता है। सादी को शिक्षकों के दोप और गुण, शिष्य और गुरु के पारस्परिक व्यवहार और शिक्षा के फल और विफल का अच्छा वर्णन किया है। उनका सिद्धान्त था कि शिक्षा चाहे कितनी ही उत्तम हो मानव स्वभाव को नहीं वदल सकती, और शिक्षक चाहे कितना ही विद्वान् और सच्चरित्र क्यों न हो कठोरता के विना अपने कार्यों में सफल नहीं हो सका। यद्यपि आजकल यह सिद्धान्त निर्मून्ति नहीं माने जा सकते तथापि यह नहीं कहा जा सका कि उनमें कुछ भी तत्व नहीं है। कोई शिक्षा

पद्धित अवतक ऐसी नहीं निकली है जो दगड का निपंध करती हो, हां कोई शारीरिक दगड के पच्च में है, कोई मानसिक दगड के पच्च में।

एक विद्वान् किसी वादशाह के लड़के को पढ़ाता था। वह उसे वहुत मारता श्रौर डांटता था। राजपुत्र ने एक दिन अपने पिता से जा कर अध्यापक की शिका-यत की। वादशाह को भी क्रोध आया। अध्यापक को वुलाकर पूछा "त्राप मेरे लड़के को इतना क्यों मारते हैं ? इतनी निर्दयता श्राप श्रन्य लड़कों के साथ नहीं करते ? " श्रध्यापक ने उत्तर दिया " महाराज, राजपुत्र में नम्ता और सदाचार की विशेष आवश्यकता है क्योंकि वादशाह लोग जो कुछ कहते या करते हैं वह प्रत्येक मनुष्य की जिह्वा पर रहता है जिसे वचपन में सत्चरित्रता की शिज्ञा नहीं कठोर पूर्वता मिलती उसमें बड़े होने पर कोई श्रच्छा गुण नहीं श्रा सकता। हरी लकड़ी को जितना चाहो मोड लो लेकिन सुख जाने पर वह नहीं मुड़ सकती।"

मेंने श्रफ़्रीक़ा देश में एक मौलवी को देखा। वह श्रत्यन्त कुरूप कठोर, श्रौर कटुभाषी था। लड़कों को पढ़ाता कम, श्रौर मारता ज़्यादा। लोगों ने उसे निकाल कर उसकी जगह एक धार्मिक, नम्, श्रोर सहनशील मौलवी को रक्खा। यह हजरत लड़कों से बहुत प्रेम से बोलते श्रोर कभी उनकी तरफ कड़ी श्रांख से भी न देखते। लड़के उनका यह स्वभाव देख कर ढीठ होगये। श्रापस में लड़ाई दंगा मचाते श्रोर लिखने की तख़ित्यां लड़ाया करते। जब में दूसरी चार फिर वहां गया तो मेंने देखा कि वही पहले वाला मौलवी बालकों को पढ़ारहा है। पूछने पर चिदित हुशा कि दूसरे मौलवी की नम्ता से उकता जाने पर लोग पहले मौलवी को मना कर लाये थे।

एक वार में बल्ल से कुछ यात्रियों के साथ श्रा रहा था। हमारे साथ एक बहुत बलवान नवयुवक था जो डींग मारता चला श्राता था कि मैंने यह किया श्रीर वह किया। निदान हम को कई डाकुओं ने घेर लिया। मैंने पहलवान से कहा श्रव क्या खड़े हो कुछ श्रपना पराक्रम दिखाओ। लेकिन लुटेरों को देखते ही उस मनुष्य के होश उड़ गये। मुख फीका एड़ गया। तीर कमान हाथ से छूट कर गिर एड़ा और वह थर थर कांपने लगा। जब उसकी यह दशा देखी तो श्रपने श्रसवाब वहीं छोड़ कर हम लोग भाग खड़े हुए। यों किसी तरह प्राणु बचे।

जिसे युद्ध का अनुभव हो वही समर में अड़ सका है। इस के लिये बल से अधिक साहस की ज़करत हैं।

[=] आठवें पकरण में सादी ने सदाचार और सद्ब्यवहार के नियम लिखे हैं। कथाओं का आश्रय न लेकर खुले खुले उपदेश किये हैं। इस लिये सामान्य रीति से यह अध्याय विशेष रोचक न हो सक्ता था, किन्तु इस कमी को सादी ने रचना सौन्दर्य से पूरा किया है। छोटे छोटे बाक्यों में सूत्रों की भांति अर्थ भरा हुआ है। यह प्रकरण मानों सादी के उपदेशों का निचीड़ है। यह ब्रह उपवन हैं जिसमें राजनीति, सदाचार, मनोविज्ञान, समाजनीति, समाचातुरी में रङ्ग-विरङ्गे पुष्प लहलहा रहे हैं। इन फूलों में छिपे हुए कांटे भी हैं, जिन में यह श्रद्भुत गुण है कि वह वहीं चुभते हैं जहां चुभना चाहिये — गेरुवे बाने को ब्राड़ में, छित्री हुई स्वार्थान्धता में, उपाधियां के नीचे छिपी हुई मूर्खता में, उन हाथों में जो सलाम को उठते हैं, लेकिन दीनों के उठाने की नहीं उठते, उन हृद्यों में, जहां सारे संसार की श्रभिलापाओं के लिए स्थान है किन्तु प्रेम और दया के लिए नहीं। संसार में कुछ ऐसे उपदेशक होते हैं जो धन की श्रत्याचार का यंत्र श्रीर धनी को समाज का शत्रु समकते हैं। उनमें एक प्रकार की ईर्पा होती है जो सुख श्रीर सम्पत्ति को देख-कर तृणवत् जल उठती है। ऐसे उपदेशकों को cynic परिश्वदान्वेपी कहते हैं। सादी cynic नहीं है। वह ईपांलु हृदय से उपदेश नहीं करता। इसका हृद्य शीतल, कोमल और मधुर है। इह धन का मुका नहीं, लेकिन धन की निन्दा भी नहीं करता।

वह ऐश्वर्थ्य का श्रभिलापी नहीं लेकिन उसका निरादर भी नहीं करता है। उसमें वड़ा प्रशंसनीय गुण यह है कि वह श्रपने उपदेशों में श्रादर्श के साथ साथ व्यवहारिक दृष्टि भी रखता है।

धन जीवन के खुल के लिए है, किन्तु जीवन धन संग्रह करने के लिए नहीं है। मैं ने एक बुद्धिमान से पूछा, "संसार में भाग्यदान कौन है, और कौन भाग्यदीन ?" योला " जिसने भोगा और यश कमाया वह भाग्यवान है, किन्तु जिसने धन कमाया और छोड़ कर मर गया वह भाग्यदीन है। "

उन दो मनुष्यों ने घृथा कष्ट उठाया श्रौर वृथा परिश्रम किया। एक तो वह जिसने घन संग्रह किया श्रौर उसे भोगा नहीं, दूसरा वह जिसने विद्या पढ़ी किन्तु उसका उपयोग न किया।

दुष्टों पर द्या करना, सज्जनों पर श्रत्याचार है।

नृपतियों की भित्रता श्रौर बालकों की मीठी मीठी बातों पर भरोसा नहीं करना चाहिये। ( 45 )

तुम्हें लिजत न होना पड़ें।

यदि कोई निर्वत शत्रु तुम्हारे साथ मित्रता करे तो तुम को उससे अधिक सचेत रहना चाहिये। जब मित्र की सच्चाई का ही भरोसा नहीं तो शत्रुओं की खुशामद का क्या विश्वास!

जो मनुष्य अपने भित्र के शत्रुओं से भित्रता करता है यह अपने भित्र का शत्रु है।

जब तक धन से काम निकले तब तक जान को

जोलिम मॅन डालो । जब कोई उपाय न रहेतो म्यान सेतलबार खींचो ।

शत्रुकी सलाह के विरुद्ध काम करना ही बुद्धिमानी है। श्रगर वह तुम्हें तीर के समान सीधी राह दिखावे तो भी उसे छोड़ दो श्रौर टेड्री राह जाओ।

> 11706 : 11 11 11 11 11 11 11 11

न तो इतनी कड़ाई करो कि लोग तुम से उरने लगें, त्रीर न इतनी नमूता कि लोग लिर चढ़ें।

दो मनुष्य राज्य श्रौर धर्म के शत्रु हैं, निर्दयी राजा श्रौर मुर्ख साधु।

राजा को उचित है कि श्रपने शतृश्रों पर इतना कोध न करें कि जिससे मित्रों के मन में भी खटका हो जाय।

जय शत्रुकी कोई चाल काम नहीं करती तय वह भित्रता उत्पन्न करता है, मित्रता के वहाने से वह उन सब कामों को कर सक्ता जो वह दुश्मन रह कर न कर सका।

साँप के सिर को श्रपने बैरी के हाथ से कुचलवाश्रो। या तो साँप ही मरेगा या .तुश्मन ही से गला छूटेगा। अय तक तुम्हें पूर्ण विश्वास न हो कि तुम्हारी यात पसन्द आवेगी तव तक वादशाह के सामने किसी की निन्दा मत करों; अन्यथा तुम्हें स्वयं हानि उठानी पड़ेगी।

जो व्यक्ति किसी घमएडी आदमी को उपदेश करता है, वह खुद नसीहत का मुहताज है।

जो मनुष्य सामर्थ्यवान् हो कर भी भलाई नहीं करता उसे सामर्थ्यहीन होने पर दुःख भोगना पड़ेगा। अत्याचारी का विषद में कोई साथी नहीं होता।

कित्ती के छिपे हुए ऐव मत स्रोलो; इससे तुम्हारा भी विश्वास उठजायगा।

विद्या पढ़कर उसका श्रमुशीलन न करना, ज़मीने जोत कर बीज न डालने के समान है।

जिसकी भुजाओं में वल नहीं है, यदि वह लोहे

की कलाई वाले से पंजा ले तो यह उसकी सूर्खता है

दुर्जन लोग सजनों को उसी तरह नहीं देख सक्ते जिस तरह वाज़ारी कुत्ते शिकारी कुत्तों को देखकर दूर से गुर्रात हैं, लेकिन पास जाने की हिस्मत नहीं करते।

गुणहीन गुणवानों से द्वेप करते हैं।

बुडिमान लोग पहला भोजन पच जाने पर फिर खाते हैं; योगी लोग उतना खाते हैं जितने से जीवित रहें, जवान लोग पेट भर खाते हैं, वूढ़े जवतक पसीना न ब्राजाय खाते ही रहते हैं, किन्तु क़लन्दर इतना खा जाते हैं कि सांस की भी जगह नहीं रहती।

श्रगर पत्थर हाथ में हो श्रीर साँप नीचे तो उस समय सोच विचार नहीं करना चाहिये।

श्रगर कोई वृद्धिमान मूर्खों के साथ वाद्दविवाद करे तो उसे प्रतिण्टा की श्राशा न रखनी चाहिये। ( 44 )

जिस मित्र को तुम ने बहुत दिनों में पाया है उरुसे मित्रता निभाने का यत्न करो।

विवेक इल्ट्रियों के श्रधीन है जैसे कोई सीधा मनुष्य किसी संचल स्त्री के श्रधीन हो।

ं वृद्धि, विनावल के छल श्रीरकपट है, बल विना वृद्धि के मूर्खता श्रीर कुरता है।

जो व्यक्ति लोगों का प्रशंसापात्र बनने की इच्छा से वासनाओं का त्याग करता है, वह हलाल को छोड़कर हराम की श्रोर मुकता है।

हो वार्ते असम्भय हैं, एक तो अपने अंश से अधिक स्नाना, दूसरे मृत्यु से पहले मरना।

## ∸क्ष बीस्तां क्ष~

- and Beller

फ्रारकी साहित्य की पाठध पुस्तकों में गुलिस्तां के धार बोस्तां ही का प्रचार है। यह कहने में कुछ श्रत्यु-क्ति न होगी कि काव्यग्रन्थों में बोस्तां का वही श्राटर है जो गद्य में गुलिस्तां का है। निजामी का सिकन्दर-मामा, फ़िरदौसी का शाहनामा, मौलाना कम की मसनवी. और दीवान हाफिज, यह चारों प्रनथ घोस्तां ही के समान गिने जाते हैं। निजामी और पिरदौसी बीर-रस में अद्वितीय हैं। मौलाना कम की . संसनवी भक्ति सम्बन्धी प्रन्थों में श्रपना जवाब नहीं रखती, और हाफिज प्रेम-रस के राजा है। इन चारी काच्यों का आदर किसी न किसी अंश में उनके विषय पर निर्भर है। लेकिन बोस्ता एक नीति-प्रन्थ है और मीति के प्रन्थ बहुधा जनता को प्रिय नहीं हुआ करतें। भ्रतएव बोस्तां का जो आदर और प्रचार है वह सर्वथा उसकी सरलता श्रीर विचारोत्कर्ष पर निर्भर है। मौलाना क्षम ने सीवन के गूढ़ तत्वों का वर्णन किया है और धार्मिक विचार के मनुष्यों में उसका वडा मान है। भाषा की मध्रता, और प्रेम कें भाव में हाफिज सादी से वहुत : घढा हुआ है। उसकी सी मर्मस्पर्शिनी कविता फारसी में और फिसीने नहीं की। उसके गुजुलों के फितने ही भीर जीवन की साधारण वातों पर ऐसे घटते हैं मानी

उसी श्रवसर के लिए लिखें गये हीं। धन्य है शीराज की वह पवित्र भृमि जिसने सादी श्रीर हाफ़िज़ जैसे दो पेसे श्रमृत्य रन्न उत्पन्न किये। भाषा श्रीर भाव की सरलता में सादी सर्वश्रेष्ट माने जाते हैं। फिरदौमी श्रीर निजामी बहुधा अलांकिक वानों का वर्णन करते हैं: पर सादी ने फहीं श्रलांकिक घटनाश्रों का सहारा नहीं लिया है। यहांतक कि उसकी अन्युक्तियां भी अस्वाभाविक नहीं होतीं। उन्हों ने समयानुसार सभी रसों का वर्णन किया है लेकिन करुणा-रस उन में सर्दप्रधान है। द्या के वर्णन में उनकी लेखनी यहुत ही करुण हो गई है। सादी निमाज और रोज़े के पायन्द तो थे किन्तु सेबाधर्म को उस से भी श्रेष्ठ समभते थे। उन्हों ने वारम्वार सेवा पर ज़ोर दिया है। उनका दूसरा त्रिय विषय राजनीति हैं। बादशाहाँ को न्याय, धर्म, दीनपालन और समा का उपदेश करने से वह कभी नहीं धकते। उनकी राजनीति पर लायलटी (राजभक्ति) का ऐसा रंग नहीं चढा था कि यह खरी खरी वातों के कहने से चुक जायं। उनके राजनीति विषयक विचारों की स्वतन्त्रता पर श्राज भी श्रार्चर्य होता है। इस बीसवीं शताब्दि में भी हमारे यहां वेगार की प्रधा कायम है। लेकिन श्राज के कई सी वर्ष पहले अपने प्रन्थों में सादी ने कई जगह इसका विरोध किया है।

बोस्तां में १० श्रध्याय हैं उनकी विषय सुची देखने

से विदित होता है कि सादी की नीतिशिह्ना कितनी विस्तीर्ग है —

प्रथम श्रध्याय			•••	न्याय श्रौर राजनीति		
द्धितीय	"		•••	•••	•••	द्या
नृतीय	"	•••	•••	•••	•••	प्रेम
चतुर्थ	33	•••	•••	•••		विनय
पश्चम	"	•••	•••	•••	***	धैर्य
पष्ठ	97	•••	•••	•••	•••	सन्तोष
सप्तम	"	•••	•••	***	•••	शिद्या
श्रदम	13	•••		•••	•••	<b>कृतज्ञता</b>
नंबम	57	•••	***		!	प्रायश्चित्त
द्शम	,,	•••	•••	•••	<b>ई</b> श्व	र प्रार्थना

नीतिग्रन्थों की श्रावश्यकता यों तो जन्म भर रहती है लेकिन पढ़ने का सब से उपग्रुक्त समय बाल्यावस्था है। उस समय उनके मानवचरित्र का श्रारंभ होता है। इसी लिए पाठ्यपुस्तकों में वोस्तां का इतना प्रचार है। संसार की कई प्रसिद्ध भाषाश्रों में इसके श्रनुवाद हो चुके हैं। सर्वसाधारण में इस के जितने शेर लोकोक्ति के रूप में प्रचलित हैं उतने गुलिस्तां के नहीं। यहां हम उदाहरण की भांति दो चार कथायें देकर ही सन्तोष करेंगे —

(१) सीरिया देश के एक वादशाह जिसका नाम

"सालेह" था कभी कभी अपने एक गुलाम के साथ भेप बद्रल कर बाज़ारों में निकला करता था। एक बार उसे एक मस्जिद में दो फुक़ीर मिले। डन में से एक दूसरे से कहता कि अगर यह बादशाह लोग जो भोग-बिलास में जीवन व्यतीन करते हैं स्वर्गमें श्रावेंगे तो मैं उनकी तरफ़ आरंख उठाकर भीन देखेंगा। स्वर्गपर हमारा श्रधिकार है न्योंकि हम इस लोक में दुःख भोग रहे हैं। अगर सालेह वहां बाग की दीवार के पास भी प्राया तो जुते से उसका भेजा निकाल लुंगा। सालेह यह त्रातं सुन कर वहां से चला आया । प्रातःकाल उस ने दोनों फुड़ींगें को बुलाया और यथोचित आदर सत्कार करके उच्चासन पर वैठाया। उन्हें बहुत साधन दिया। तव उन में से एक फ़क़ीर ने कहा है वादशाह, त् हमारी किस बात से ऐसा प्रसन्न हुआ ? बाइशाह हर्प से गट्गट् होकर बोला में वह मनुष्य नहीं हूं कि ऐश्वर्थ्य के श्रिभमान में दुर्वलों को भूल जाऊं। तुम मेरी श्रीर से श्रपना हृद्य साफ कर लो श्रीर स्वर्ग में मुक्ते ठोकर मारने का विचार मत करो। मैंने श्राज तुम्हारा सत्कार किया है, तुम कल मेरे सामने स्वर्ग का द्वार न वन्द करना।

(२) छुना है कि ईरान देश का बादशाह दारा एक दिन शिकार केलने गया और अपने साधियों से छूट गया। कहीं खड़ा इधर उधर ताक रहा था कि एक चरवाहा दे। इता हुआ उसके सामने आया। बादशाह ने इस मय से कि यह कोई शतु न हो तुरंत धतुष चढ़ाया। चरवाहे ने चिल्ला कर कहा "हे महाराज, में आपका चैरी नहीं हूं। मुस्ने मारने का विचार मत कीजिये। में आपके घोड़ों को इसी चरागाह में चराने लाया करताहु।" तव वादशाह को धीरज हुआ। वोला "त् वड़ा भाग्यवान था कि आज मरते मरते वच गया"। चरवाहा हंस कर घोला "महाराज, यह बड़े खेद की वात है कि राजा अपने मित्रों और शतुओं को न पहचान सके। में हज़ारों वार आपके सामने गया हूं। आपने घोड़े के सम्बन्ध में मुक्त से वार्त की हैं। आज आप मुक्ते ऐसा भूल गये। में तो अपने घोड़ों को लाखों घोड़ों में पहचान सकता हूं। आपको आदिमियों की पहचान होना चाहिए।"

(३) बादशाह "उमर" के पास एक ऐसी बहुमूल्य अंगूठी थी कि बड़े बड़े जौहरी उसे देख कर हंग रह जाते। उसका नगीना रात को तारे की तरह समकता था। संयोग से एक बार देश में अकाल पड़ा। बादशाह ने अंगूठी बेच दी और उससे एक सप्ताह तक अपनी भूखी प्रजा का उदर पालन किया। बेचने के पहले बादशाह के शुभिचिन्तकों ने उसे बहुत समकाया कि ऐसी अपूर्व अंगूठी मत बेचिये, फिर न मिलेगी। उमर ने न माना। बोला "जिस राजा की प्रजा दुःख में हो उसे यह अंगूठी शोभा नहीं देती। रस्जटित आमूण्यों

को ऐसी दशा में पहिनना कब उचित कहा जा सकता है कि जब मेरी प्रजा दाने को तरसनी हो।"

- (४) दिमिश्क में एक वार ऐसा अकाल एड़ा कि यड़ी वड़ी निर्या और नाले सूख गये, और पानी का कहीं नाम न रहा। कहीं था तो अनाथों की आंखों में। विद किसी घर से घुआं उठता था तो वह च्ले का नहीं किसी विधवा, दीना की आह का घुआं था। उस समय में ने अपने एक धनवान मित्र को देखा, जो उदासीन, सूख कर कांटा हो गया था। मैंने कहा, भाई तुम्हारी यह क्या दशा हो रही है, तुम्हारे घर में किस वात की कमी है? यह सुनते ही उसके नेत्र सजल हो गये। योला, मेरी यह दशा अपने दुःख से नहीं, वरन दूसरों के दुःख से हुई है। अनाथों को चुआ से विलखते देखकर मेरा हृदय फटा जाता है। वह मनुष्य पशु से भी नीच है जो अपने देशवासियों के दुःख से व्यथित न हो।
- (५) यक दुष्ट सिपाही किसी कुंप में गिर पड़ा। सारी रात पड़ा रोता चिल्लाता रहा। कोई सहायक न हुआ। एक आदमी ने उलटे यह निर्दयता की कि उस के सिर पर एक पत्थर मार कर वोला कि दुरात्मा, तृते मी कभी किसी के साथ नेकी की है आज दूसरों से सहायता की आशा रखता है। जब हज़ारों हदय तेरे अन्याय से तड़प रहे हैं, तो तेरे घायों की सुधि कौन लेगा। कार्ट वो कर फूल की आशा मत रख।

(६) एक अत्याचारी राजा देहातियों के गधे बेगार में पकड लिया करता था। एक वार वह शिकार खेलने गया और एक हिरन के पीछे घोडा दौडाता हम्रा अपने आदमियों से बहुत आगे निकल गया। यहांतक कि संध्या हो गई। इधर उधर अपने साथियों को देखने लगा। लेकिन कोई देख न पडा। विवश होकर निकट के एक गांव में रात काटने की ठानी। वहां क्या देखता है कि एक देहाती अपने मोटे ताज़े गधे को डंडों से मार मार कर उसके धुरें उडा रहा है। राजा को उसकी यह कठोरता बुरी मालुम हुई। बोला, अरे भाई क्या तू इस दीन पश को मार ही डालेगा तेरी निर्देयता पराकाष्टा को पहुं चगई। यदि ईश्वर ने तुक्षे वल दिया है तो उसका ऐसा दुरुपयोग मत कर। देहाती ने विगड़ कर कहा तुम से क्यामतलव है ? मैं जाने क्या समभ कर इसे मारता हूं। राजा ने कहा, श्रच्छा बहुत बक-बक मत कर, तेरी वृद्धि भृष्ट होगई है, शराब तो नहीं पी ली ? देहाती ने गम्भीरभाव से कहा मैंने न शराव पी है, न पागल हूं, मैं इसे केवल इसी लिये मारता हं जिस में यह इस देश के श्रत्याचारी राजा के किसी .. काम का न रहे। लंगड़ा श्रौर बीमार होकर मेरे द्वार पर पड़ा रहे, यह मुक्ते स्वीकार है। लेकिन राजा को वेगार में देना स्वीकार नहीं। राजा यह उत्तर सुनकर चुप रहगया। रात तारे गिन-गिन कर काटी। प्रातःकाल उसके आदमी खोजते हुए वहां श्रा पहुंचे

जब खा पी कर निश्चिन्त हुआ तो राजा को उस गंवार की याद आई। उसे पकड़वा मंगाया और तलवार खींच कर उसका सिर काटने पर तैयार हुआ। देहाती जीवन से निराश होगया और निर्भय होकर योला, हे राजा, तेरे अत्याचार से सारे देश में हाय हाय मची हुई है। कुछ में ही नहीं बिल्क तेरी समस्त प्रजा तेरे अत्याचार से सारे देश में हाय हाय मची हुई है। कुछ में ही नहीं बिल्क तेरी समस्त प्रजा तेरे अत्याचार से बवड़ा उटी है। यदि तुम्में मेरी वात कड़ी लगती है तो न्याय कर कि फिर ऐसी वातें सुनने में न आवं। इसका उपाय मेरा सिर काटना नहीं, बिल्क अत्याचार को छोड़ देता है। राजा के हुद्य में आक उत्यन्न होगया। देहाती को समा कर दिया और उस दिन से प्रजा पर अत्याचार करना छोड़ दिया।

(७) सुना है कि एक फ़क़ीर ने किसी वादशाह से उसके अन्याचारों की निन्दा की। वादशाह को यह वात दुरी लगी और उसे फ़ैंद कर दिया। फ़क़ीर के एक मित्र ने उससे कहा, तुम ने यह अच्छा नहीं किया। वादशाहों से ऐसी वार्त नहीं कहनी चाहियें। फ़क़ीर बोला, ने ने जो कुछ कहा वह सत्य है, इस फ़ैंद का क्या डर, दो चार दिन की वात है। वादशाह के कान में यह वात पहुंची। फ़क़ीर को कहला सेजा, इस मूल में न रहना कि दो चार दिन में खुट्टी हो जायगी, तुम उसी फ़ैंद में मरोगे। फ़क़ीर यह सुन कर वोला, जाकर वादशाह से कहदों कि सुमें यह धमकी न दें। यह ज़िन्दगी दो चार दिन से ज़्यादा न रहेगी, मेरे लिए दुःख सुख दोनों बराबर हैं। त् ऊंचे आसन पर वैठा दे तो उसका खुशी नहीं, सिर कार डाल तो उसका कुछ रंज नहीं। मरने पर हम श्रीर तुम दोनों बराबर हो जायंगे। दशहीन बादशाह यह सुनकर श्रीर भी विगड़ा, श्रीर हुकम दिया कि इसकी ज़बान तालू से खींच ली जाय। फ़कीर बोला मुक्को इसका भी भय नहीं है। खुदा मेरे मन का हाल विना कहे ही जानता है। त् श्रपने को रो जिस शुभ दिन को मरेगा देश में श्रानन्दोत्सन की तरंगें उठने लगेंगी।

(म) एक कि किसी सज्जान के पास जाकर बोला कि मैं बड़ी विपत्ति में पड़ा हुआ हूं, एक नीच आदमी के मुक्क पर दस रुपये आते हैं। इस ऋण के बोक्क से में दबा जाता हूं। कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि वह मेरे हार का चकर न लगाता हो। उसकी वाण सरीली वातों ने मेरे हदय को चलनी बना दिया है। वह कौन सा दिन होगा कि मैं इस ऋण से मुक्क हो जाऊंगा। सज्जान पुरुष ने यह सुन कर उसे एक अशरफी ही। कि अति प्रसन्न हो कर चला गया। एक दूसरा मजुष्य वहां वैटा था। बोला, आप जानते हैं यह कौन है। यह ऐसा धूर्त है कि बड़े बड़े दुधें के भी कान काटता है। यह अगर मर भी जाय तो रोना न चाहिये। सज्जान ने उससे कहा चुप रह, किसी की निन्दा को करता है। अगर उसके ऊपर वास्तव में ऋण है तब तो

ङसका गला इट्र गया। लेकिन यदि उसने मुक्त से धृर्तता की हैं तब भी मुक्ते पञ्चताने की क़करत नहीं वर्षोकि रुपये न पाता तो वह मेरी निन्दा करने लगता।

- (१) मैंने सुना है कि हिजाज़ के रास्ते पर एक आहमी पन पन पर निमाज़ पढ़ता जाता था। इस सर्मार्ग में इतना लोन हो रहा था कि पैरों से कोटे भी निकालता था। निदान उसे अभिमान हुआ कि ऐसी कठिन तपस्या दूसरा कौन कर सक्ता है। तय आकाश्रवाली हुई कि भले आहमी त् अपनी तपस्या का अभिमान मन कर। किसी मनुष्य पर दया करना पग पन पर नमाज़ पढ़ने से उत्तम है।
- (१०) एक दीन मनुष्य किसी धनी के पास गया क्रांर कुछ मांगा। धनी मनुष्य उसे कुछ देता तो गया, उत्तर नौकर से धके दिलवाकर उसे वाहर निकलवा दिया। कुछ काल उपरान्त समय पलटा। धनी का धन नष्ट हो गया, सारा कारोवार विगड़ गया। खाने तक का ठिकाना न रहा। उसका नौकर एक ऐसे सज्जन के हाथ पड़ा, जिसे किसी दीन को देख कर वहाँ प्रजक्ता होती थी जो दिस्को धन से होती है। अन्य नौकर जाकर छोड़ मागे। इस दुरवस्था में बहुत दिन बीत गये। एक दिन रात को इस धर्मात्मा के द्वार पर किसी साधु ने ब्राकर मोजन मांगा। उस ने नौकर से कहा उसे मोजन दे दो। नौकर जब मोजन देकर

लौटा तो उसके नेत्रों से आंस् वह रहे थे। स्वामीने पृक्षा, क्यों रोता है? बोला, इस साधु को देख कर मुझे वड़ा दुःख हुआ। किसी समय में उसका सेवक था। उसके पास धन, धरती सब था। आज उसकी यह दशा है कि भीख मांगता किरता है। स्वामी सुन कर इंसा और कहा बेटा, संसार का यही रहस्य है। मैं भी बही दीन मनुष्य हूं जिसे इसने तुक से धके देकर बाहर निकलवा दिया था।

(११) याद नहीं आता कि मुभ से किस ने यह कथा कही थीं कि किसी समय यमन में एक वड़ा दानी राजा था। वह धन को तृण्वत समभता था। जैसे मेघ से जल की वर्षा होती है उसी तरह उसके हाथों से धन की वर्ष होती थी। हातिम का नाम भी कोई उसके सामने लेता तो चिंदु जाता। कहा करता कि उसके पास न राज्य है न ख़ज़ाना, उसकी श्रीर मेरी क्या वरावरी ? एक बार उसने किसी श्रानन्दोत्सव में बहुत से मनुष्यों को निमन्त्रण किया। वात चीत में प्रसंगवश हातिम की भी चर्चा त्रा गई क्रौर दो चार मनुष्य उसकी प्रशंसा करने लगे। राजा के हृदय में ज्वाला सी दहक उठी। तुरंत एक आदमो को आहादी कि हातिम का सिर काट ला। वह श्रादमी हातिम की खोज में निकला। कई दिन के बाद रास्ते में उसकी एक युवक से भेंट हुई। वह गुण और शील में निपुण था। घातक को अपने घर लेगया. श्रीर बडी उदारता से उसका श्राहर सम्मान किया। जब प्रातःकाल घातक ने बिटा मांगी तो यबक ने श्रत्यन्त विनीतभाव से कहा कि यह श्रापही का घर है, इतनी जल्दी फ्याँ करते हैं। घातक ने उत्तर दिया कि मेरा जी तो बहुत चाहता है कि ठहक लेकिन एक कठिन कार्य्य करना है, उसमें विलम्य हो जायगा !-हातिम ने कहा यदि कोई हानिन हो तो मुक्त से भी वतलाश्रो कौन सा काम है, मैं भी तुम्हारी सहायता करूं। मनुष्य ने कहा, यमन के वादशाह ने मुक्ते हातिम की यथ करने भेजा है। मालुम नहीं, उनमें क्या विरोध है। त हातिम को जानता हो तो उसका पता बता दे। युवक निर्मीकता से बोला हातिम में ही है, तलवार निकाल और शीघू अपना काम पूरा कर। ऐसा न हो कि विज्ञन्य करने से तुकार्य्य सिद्धन करसके। मेरे शाल तेरे काम श्राव तो इस से यह कर मुभी श्रीर क्या श्रानन्द होगा। यह सुनते ही घातक के हाथ से तलवार छट कर जमीन पर गिर पड़ी। यह हातिम के पैरा पर गिर पड़ा श्रीर बड़ी दीनता से बोला हातिम त् वास्तव में दानवीर है। तेरी जैसी प्रशंसा सुनता था उससे कहीं बढ़ कर पाया। मेरे हाथ टूट जायें अगर तुक पर एक कंकरी भी फेंकूं। मैं तेरा दास हं श्रीर सदैव रहंगा। यह कह कर वह यमन लौट श्राया। वादशाह का मनोरथ पूरा न हुआ तो उसने उस मनुष्य का बहुत तिरस्कार किया, और बोला मालुम होता है कि त् हातिम से डरकर भाग श्राया। श्रथवा तुभे उसका पता न मिला। उस मनुष्य ने उत्तर दिया, राजन् हातिम से मेरी भेंट हुई लेकिन में उसका शील श्रीर श्रात्मसमपंश देख कर उसके वशीभृत हो गया। इसके पश्चात् उसने सारा वृत्तान्त कह सुनाया। बादशाह सुनकर चिकत हो गया श्रीर स्वयं हातिम की प्रशंसा करते हुए बोला, वास्तव में वह दानियों का राजा है, उसकी जैसी कीर्ति है वैसे ही उसमें गुए हैं।

(१२) वायज़ीद के विषय में कहा जाता है कि वह श्रितिथिपालन में बहुत उदार था। एक वार उसके यहां एक वृद्धा श्रादमी श्राया जो मूख प्यास से वहुत दुखी मालूम होता था। वायज़ीद ने तुरंत उसके सामने भोजन मंगवाया। घुद्ध मनुष्य भोजन पर दूर पड़ा। उसकी जिह्वा से 'विस्मिल्लाह' शब्द न निकला। वायज़ीद को निश्चय हो गया कि वह क़ाफिर है। उसे श्रपने घर से निकलवा दिया। उसी समय श्राकाश-वाणी हुई कि वायज़ीद मेंने इस क़ाफिर का १०० वर्ष तक पालत किया, श्रीर तुम से एक दिन भी न करते वन पड़ा।

## सादी की लोकोक्तियां



सी लेखक की सर्वेष्रियता इस वात से भी देखी जाती है कि उसके वाक्य क्रांर पद कहावतों के रूप में कहां तक प्रचलित हैं।मानवचरित्र, पारस्परिक व्यवहार, श्रादि के सम्बन्ध में जब लेखक की

लेखनी से कोई ऐसा सारगर्भित वाक्य निकल जाता है जो सर्व-व्यापक हो तो वह लोगों की ज़वान पर चढ़जाता है। गोस्वामी तुलसीदालजी की कितनी ही चौपाइयों कहावतों के रूप में प्रचलित हैं। श्रंग्रेज़ी में शेक्सपियर के वाक्यों से सारा साहित्य भरा पड़ा है। ज़ारसी में जनता ने यह गौरव शेज़सादी को प्रदान किया है। इस स्त्रेज में वह ज़ारसी के समस्त कवियों से बढ़े चढ़े हैं। यहां उदाहरण के लिए कुळ वाक्य दिये जाते हैं

श्रगर हिन्ज़िल खुरी श्रज़ दस्ते खुगखूग, वेह श्रज़ शीरोनी श्रज़ दस्ते तुरुशरूग। कवि रहीम के इस दोहे में यही भाव इस तरहं वर्शाया गया है— श्रमी पियावत मान विन, रहिमन हमें न सुहाय। प्रेम सहित मरिवो भलो, जो विष देई बुलाय।

श्रानांकि गृनीतरन्द मुहताजतरन्द । धन के साथ साथ तृष्णा भी बढ़ती जाती है।

हर पेत्र कि सुल्तां वेपसन्दद हुनरस्त। यदि राजा किसी पेत्र को भी पसन्द करेतो वह हुनर हो जाता है।

हाजते मश्शाता नेस्त कय दिलाराम रा। सुन्दरता विना श्टंगार ही के मन को मोहती है॥ स्वामाविक सौन्दर्य्य जो सोहे सव श्रंग माहि। तो कृत्रिम श्राभरन की श्रावश्यकता नाहिं॥

परतवे नेकां न गीरद हरिक बुनियादश बदस्त। जिसकी प्रकृति श्रच्छी नहीं उस पर सज्जनों के सत्संग का कुळु श्रसर नहीं, होता। हुज्ञमन रान तवां हुक़ीर व वेचारा शुमुई। शत्रु को कभी दुर्वल न समक्षना चाहिये॥

> श्राकृवत गुर्गजादा गुर्ग शवद। भेड़ियेका वसाभेड़ियाही होताहै॥

र वाग लाला रोयेद व दर शोरा व्या ख़स । लाला फूल, वाग में उगता है, ख़स जो घास है, ऊसर में।

> तवंगरी बदिलस्त न बमाल, व बुजुर्गी बश्रकलस्त न बसाल।

धनी होना धन पर नहीं वरन् हृदय पर निर्भर है। श्रोर वृद्धता श्रवस्था पर नहीं वरन् वृद्धि पर निर्भर है।

> सधन होन तें होत महिं, कोऊ लिंछमीवान। मन जाको धनवान है, सोई धनी महान॥

हसूद रा चे कुनम को ज़ेखुद वरंज दरस्त। ईर्ष्यालु मनुष्य खयं ही ईर्ष्या आग में जला करता है। उसे और सताना व्यर्थ है।

कद्रे श्राफियत कसे दानद कि वमुसीवत गिरफतार श्रायद।

दुःख भोगने से सुख के मृत्य का ज्ञात होता है। विपति भोग भोगे गरू, जिन लोगनि बहु बार। सम्पति के गुणु जानहीं, वे ही भले मकार।

चु श्रज़वे बदर्द आवरद रोजगार, दिगर श्रज़बहारा न मानद करार। जब शरीर के किसी श्रंग में पीड़ा होती है तो सारा शरीर ब्याक़त्त हो जाता है।

हर कुजा चश्मये वुवद शीरीं, मरदुमो मुर्गो मोर गिर्दायन्द। विमल मधुर जल सों भरा, जहां जलाशय होय। पशु पत्ती श्ररु नारि नर, जात जहां सब कोय॥ त्रारां कि हिसाव पाकस्त श्रज् मुहासिवा चे वाक। जिसका लेखा साफ़ है उसे हिसाव समझनेवाले का क्या डर?

दोस्त श्राँबाशद कि गीरद दस्ते दोस्त, दर परेशाँ हाली श्रो दरमाँदगी। मित्र वहीं हैं जो विपत्ति में काम श्रावे।

त्पाक वाश विरादर मदार श्रज़ कस वाक, जनन्द जामये नापाक गाजुराँ वर संग। कलह से दूर रह तो तेरा कोई कुछ नहीं विगाड़ सका। घोषी केवल मैलेकपड़े को पत्थर पर पटकता है।

चु अज़ क़ौमे यके वेदानिशी कर्द, न केहरा मन्जिलत मानद न मेहरा। किसी जाति के एक आदमी से बुराई हो जाती है तो सारी की सारी जाति वदनाम हो जाती है।

> पाय दर ज़ंजीर पेशे दोस्ताँ, चेहकियावेगानगाँदर वोस्ताँ।

मित्रों के साथ वन्दीगृह भी खर्ग है पर दूसरों के साथ उपवन भी नर्क समान है।

> नेक बाशी व बदत गोयद ख़रक, बेहिक बद बाशीब नेकत गोयन्द। |गिपर चलते इए क्षमर लोग बरा कहें त

सन्मार्गपर चलते हुए श्रगर लोग बुरा कहें तो यह उससे श्रच्छा है कि कुमार्गपर चलते हुए लोग तुम्हारी प्रशस्ता करें।

> वानिलस्त उन्चे मुद्दे गोयद्, विपन्नी दी वात मिथ्या समभी जाती हैं।

मर्द वायद कि गीरद श्रन्दर गोश, गर नविश्तास्त पन्द वर दीवार। मनुष्य को चाहिए कि यदि दीवार पर भी उपदेश लिखा हुआ मिले तो उसे ग्रहण, करे।

हमराह श्रगर शिताव छुनद हमरहे तो नेस्त । जल्दवाज़ का साथ श्रच्छा नहीं। हका कि वा उक्तवत दोज़ख़ बरावरस्त, रफ़तन व पायमदी हमसाया दर वहिश्त। पड़ोसी की सिफ़ारिश से स्वर्ग में जाना नर्क में जाने के तुख्य है।

रिड्क हरचन्द वेगुमां वरसद, शर्त श्रक्कस्त जुस्तन श्रज़ दरहा। यद्यपि भूषों कोई नहीं मरता, ईश्वर सब की सुधि लेता है, तथापि वुद्धिमान श्रादमी का धर्म है कि उसके लिए प्रयत्न करे।

> वदांज़द तमा दीद्ये होशमन्द। तृष्णा चतुर को भी श्रन्धा वना देती है।

गरदने बेतमा बुलन्द वुबद्। निस्पृह मनुष्यका सिर सदा ऊंचा रहता है।

> निकोई वा वदां करदन चुनानस्त, कि वद करदन वजाए नेक मरदां।

दुर्जनों के साथ भलाई करना सज्जनों के साथ वृराई करने के समान है।

> यके नुकसान माया दीगर शुमातत हमसाया । गांठ से धन जाय लोग हंसे ।

> > ख़ताये बुजुर्गां गिरफ़्तन ख़तास्त । चड़ों की निन्दा करना भूल हैं।

ख़रे ईसा श्रगर वमका रवद, चूं वयायद हनोज़ ख़र दाशद। काँवा कभी हंस नहीं हो सकता।

जोरे उस्ताद बेह ज़मेहरे पिदर। गुरु की ताज़ना पिता के प्यार से श्रच्छी है।

करीमांरा वदस्त अन्दर दिरम नेस्त, खुदावन्देन्यामतरा करम नेस्त। दानियों के पास धन नहीं होता और धनी दानी नहीं होते।

> परागन्दा रोज़ी परागन्दा दिल । वृत्तिहीन मनुष्य का चित्त स्थिर नहीं रहता ।

पेशे दीवार उन्चे गोई होशदार, तान वाशद दर पसे दीवार गोश। दीवार के भी कान होते हैं इसका ध्यान रख।

कि खुब्स नफ्स न गरदद य सालहा मालूम । स्वभाव की नीचता सालॉ में भी नहीं मालूम होती ।

मुश्क श्रानस्त कि खुद ववृयद्, न कि श्रचार बगोयद् । कस्तृरी की पहचान उसकी सुगन्धि से होती है गन्धी के कहने से नहीं।

कि विसियार कृवारस्त विसियार कृवार । पेटू श्रादमी का कभी श्रादर नहीं होता। कुहन जामये ख़ेश श्रारास्तन, येह श्रज़ जामये श्रारियत ख़्वास्तन । श्रपने पुराने कपड़ों की मरम्मत करके पहनना. मंगनी के कपड़ों से श्रच्छा है ।

चु सायल श्रज्ञ तो बज़ारी तलव कुनद चीज़े, वेदेह वगर न सितमगर बज़ोर वसितानद।

जो श्रादमी दीनों को नहीं देता वह श्रत्याचारियों का शिकार होतांहै।

सखुनश तरुख़ न ख़्वाही दहनश शीरों कुन। श्रगर किसी की कड़वी वात नहीं सुनना चाहते तो उसका मुंद मीठा करो।

मोरचगारा चु बुबद इत्तफ़ाक़, शेरेज़ियां रा बदरानन्द पोस्त। ऐसा संयोग भी ब्राता है कि चिउंटियां शेर की खाल नोचती हैं। हुनर बकार न आयह चुबम्त बदबाशह। भाग्यहीन मनुष्य के गुण भी काम नहीं आते।

हरिक सुस्मन न संजद अज जवाय वरंजद । जो आदमी तील कर बात नहीं करता उसे कठोर बात सुननी पड़नी हैं।

> श्रन्दक श्रन्दक यहम श्रवद् विसियार। एक एक दाना मिलकर ढेर हो जाता है।

यद्यपि सादी ने जो उपदेश किये हैं यह श्रन्य लेखकों के यहां भी पाये जाते हैं, लेकिन फ़ारसी में सादी की सी ख्याति किसी ने नहीं पाई थीं। इससे विदित होता है कि लोकिपयता यहुत कुछ भाषा सौन्दर्य पर श्रयलम्ब्रित होती हैं। यहां हमने सादी के कुछ वाक्य दिये हैं लेकिन यह सममना भूल होगी कि केवल यही प्रसिद्ध हैं। सारी गुलिस्ताँ ऐसे ही मार्मिक वाक्यों से परिपूर्ण हैं। संसार में ऐसा एक भी श्रन्थ नहीं हैं जिसमें ऐसे वाक्यों का इतना श्राधिक्य हो जो कहावत वन सक्ते हों।

गोस्वामी तुलसीदांस जी पर यह दोपारोपण किया जाता है कि उन्होंने कई भूमोत्पादक चौपाइयां लिख कर समाज को बड़ी हानि पहुंचाई है। कुछ लोग सादी पर भी यही दोष लगाते हैं, और यह वाक्य अपने पन्न के पुष्टि में पेश करते हैं —

> श्चगर शहरोज़ रा गोयद शवस्त ई, ववायद गुपृत ईनक माहो परवीं।

अगर वादशाह दिन को रात कहे तो कहना चाहिये कि हां, हुजूर, देखिए चांद निकला हुआ है।

इसपर यह त्राह्मेप किया जाता है कि सादी ने वाद-शाहों की भूठी खुशामद करने का परामर्श दिया है। लेकिन जिस निर्भयता और स्वतन्त्रता से उन्होंने वादशाहों को हानोपदेश किया है उस पर विचार करते हुए सादी पर यह श्राह्मेप करना विलक्कल न्याय संगत नहीं मालूम होता। इस का श्रीभ्रमाय केवल यह है कि खुशामदी लोग ऐसा करते हैं। इसी तरह लोग इस वाक्य पर भी पतराज करते हैं

दरोगें मसलहत श्रामेज बेह, श्रज रास्ती फ़ितना श्रंगेज ।

वह भूठ जिस से किसी की जान बचे उस सच से उत्तम है जिस से किसी की जान जाय। कहा जाता है कि असत्य सर्वथा अन्नम्य है श्रीर सादी का यह वाक्य भूठ के लिये रास्ता खोल देता है। लेकिन विवाद के लिए इस वाक्य की उपेत्ता चाहे की जाय, श्रीर श्रादर्श के उपासक चाहे इसे निन्च समर्के, पर कोई सहदय मनुष्य उसकी उपेत्ता न करेगा। इसके साथ ही सादी ने श्रागें चल कर एक श्रीर वाक्य लिखा है जिससे विदित होता है कि वह सार्थ के लिए किसी हालत में भी भूठ वोलना उचित नहीं समक्षते थे:

गर रास्त सुख़न गोई वदर बन्द वेमानी, वेद्द ज़ांकि दरोगृत देहद श्रज् बन्द रिहाई।

यदि सच वोलने से तुम क़ैंद हो आश्रो तो यह उस भूठ से श्रच्छा है जो क़ैंद से मुक्त कर दे। इससे यह जान पड़ता है कि पहला वाक्य केवल दूसरों की विपत्ति के पत्त में है, श्रपने लिए नहीं।



## आहवां अध्याय

## चरित्र ।

टी उन कवियों में हैं जिनके चरित्र का प्रतिविम्ब उनके काव्य रूपी दर्पण में 'स्पष्ट दिखाई देता है। उन के उपदेश उनके हृदय से निकलते थे और यही कारण है कि उनमें इतनी प्रवल शक्ति भरी हुई है। सैकड़ों श्रन्य उपदेशकों की भांति वह परमार्थ-ज्ञान का मार्ग दूसरों को दिखाकर स्वयं स्वार्थ पर जान न देते थे। दूसरों को न्याय, धर्म, श्रौर कर्तव्यपालन की शिज्ञा देकर स्वयं विलासिता में लिप्त न रहते थे। उन की वृत्ति . स्वभावतः सात्विक थी और कभी वासनाओं से उनका मन विचलित नहीं हुआ। श्रन्य कवियों की मांति उन्हों ने किसी राज दरबार का आश्रय नहीं लिया। लोम को कभी अपने पास नहीं आने दिया। यश और ऐश्वर्य दोनों ही सत्कर्म के फल हैं। यश दैविक है, पेश्वर्थ्य माजुविक । सादी ने दैविक फल पर सन्तोष किया, मानुविक के लिए हाथ नहीं फैलाया। धन की देवी जो वितदान चाहती हैं उसकी सामर्थ्य सादी में नहीं थी।

बह श्रपनी श्रात्मा का श्रल्पांश भी उसे भेंट न कर सक्ते थे। यही उनकी निभीकता का श्रवलम्य है। राजाश्री को उपदेश करना साँप के विल में डँगली डालने के समान है। यहां एक पांव अगर फला पर रहना है तो दसरा कोंटों में। विशेष करके सादी के समय में तो राजनीतिका उपदेश श्रीरभी जोखिमका कामधा। ईरान और बगढाद दोनों ही देशों में अरवों का पतन हो रहा था और तातारी बादशाह प्रजा को पैरों नले कुचले डालते थे। लेकिन सादी ने उस कठिन समय में भी श्रपनी टेक न छोडी। जब वह शोराज से इसरी बार वगुदाद गये तो वहाँ हलाकृताँ मुगल का वेटा श्रवाकार्यां यादशाह था। हलाकुलाँ के घोर श्रत्याचार चंगीज द्यार तेमूर की पैशाचिक करतायां को भी लिक करते थे। श्रवाकालाँ यद्यपि ऐसा श्रत्याचारी न था तथापि उसके भय से प्रजा थर थर कांपती थी। उसके दो प्रधान कर्मचारी सादी के भक्त थे। एक दिन सादी बाजार में घुम रहे थे कि बादशाह की सवारी धम धाम से उनके सामने से निकली। उनके दोनों कर्मचारी उनके साथ थे। उन्होंने सादी को देखा तो घोडों से उतर पडे ग्रौर उनका वडा सत्कार किया। वादशाह को अपने वजीरों की यह श्रद्धा देखकर वडा कुतृहल हुत्रा। उसने पृछा यह कौन श्रादमी है। वजीरों ने सादी का नाम श्रीर गुरा वताया। वादशाह के हृदय में भी सादी की परीज्ञा करने का विचार पैदा हुआ। वोला

कुछ उपदेश मुफ्ते भी कीजिये। संभवतः उसने सादी से अपनी प्रशंसा करानी चाही होगी। लेकिन सादी ने बड़ी निर्भयता से यह उपदेश-पूर्ण शेर पढ़ेः

> शहे कि पासे रऐयत निगाह मीदारद, हलाल वाद ज़िराजश कि मुज़्दे चौपानीस्त । चगर न राइये ख़त्क़स्त ज़हरमारश वाद, कि हरचे मीख़रद श्रज़ ज़ज़ियए मुसलमानीस्त ।

भावार्थ — वह वादशाह जो प्रजापालन का ध्यान रखता है एक चरवाहे के समान है। यह प्रजा से जो कर लेता है वह उसकी मज़दूरी है। श्रौर यदि वह ऐसा नहीं करता तो वह हराम का धन खाता है।

श्रवाकाखाँ यह उपदेश सुन कर चिकत हो गया। सादी की निर्भयता ने उसे भी सादी का भक्त बना दिया। उसने सादी को बड़े सम्मान के साथ विदा किया।

सादी में आत्मगौरव की मात्रा भी कम न थी। वह आत पर जान देने वाले मतुष्यों में थे। नीचता से उन्हें शृणा थी। एक बार इस्कनदरिया में बड़ा अकाल पड़ा। लोग इघर उघर भागने लगे। वहां एक बड़ा सम्पत्तिशाली ख़ोजा था। वह ग़रीवों को खाना खिलाता और अभ्यागतों की अच्छी सेवा सम्मान करता। सादी भी वहीं थे। लोगों ने कहा आप भी उसी ख़ोजे के मेहमान वन जाइये। इसपर सादी ने उत्तर दिया —

ं "शेर कभी कुत्ते का जुठानहीं खाता चाहे प्रपनी मौद मॅभूखों भले मर ही जाय।"

सादी को धर्मध्वजी-पन से बड़ी चिढ़ थी। वह प्रजाको मृर्ख श्रौर स्वार्थी मुल्लाश्रों के फन्दे में पड़ते देख कर जलजाते थे । उन्होंने काशी, मथुरा, बृन्दावन या प्रयाग के पाखरडी परडों की पोपलीलायें देखी होतीं तों इस विषय में उनकी लेखनी श्रवश्य कुछ श्रीर तीव हो जाती। छुत्रधारी श्रौर हाथी पर वैठने वाले महन्त, पारिकयों में चंवर डुलाते चलने वाले पुजारी, धन्टा तिलक मुद्रा में समय कुर्च करने वाले परिंडत, श्रीर राजा रईसों के दर्बार में जिलीना वननेवाले महात्मा उनकी समालोचना को कितना रोचक श्रौर हृदयशाही वना देते ? एक अवसर पर लेखक ने दो जटाधारी साधुर्क्षों को रेल गाड़ी में बैठे देखा। दोनों महात्मा एक पूरे कम्पार्टमेएट में वैठे हुए थे श्रीर किसी को भीतर न युसने देते थे। मिले हुए कम्पार्टमेन्टों में इतनी भीड़ थीं कि आदिमियों को खड़े होने की जगह भी न मिलती थी। एक बृद्ध यात्री खड़े खड़े थक कर धीरे से साधुआँ के डच्चे में जा बैठा। फिर क्या था। साध्युओं की योग्य शक्ति ने प्रचएड रूप धारण किया, वुड्ढे को डांट वताई श्रीर ज्याही स्टेशन श्राया, स्टेशन-मास्टर के पास जा कर फ़रियाद की कि वावा, यह बूढ़ा यात्री साधुर्क्रों को बैठने नहीं देता। मास्टर साहव ने साधुक्रों की डिगरी कर दी। भस्म और जटा की यह चमत्कारिक शक्ति देख कर सारे यात्री रोब में आ गये और फिर किसी को उनकी उस गाड़ी को अपवित्र करने का साहस नहीं हुआ। इसी तरह रीवां में लेखक की मुलाकात एक सन्यासी से हुई। वह स्वयं अपने गेरुवे वाने पर लिजित थे। लेखक ने कहा आप कोई और उद्यम क्यों नहीं करते ? बोले, श्रव उद्यम करने की सामर्थ्य नहीं, श्रीर करें भी तो कौन सा उद्यम करें। मेहनत मजूरी होती नहीं, विद्या कुछ पढ़ो नहीं, श्रव तो जीवन इसी भांति कटेगा। हां ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि दूसरे जन्म में मुभे सद्युद्धि दे और इस पाखराड में न फँसावे। सादी ने ऐसी हज़ारों घटनायें देखी होंगी, और कोई श्राश्चर्य्य नहीं कि इन्हीं वातों से उनका दयाल हृदय पाखरिडयों के प्रति ऐसा कठोर हो गया हो।

सादी मुसलमानी धर्मशास्त्र के पूर्ण पिएडत थे। लेकिन दर्शन में उनकी गति बहुत कम थी। उनकी नीति शिल्ला स्वर्ग और नर्क, तथा भय पर ही अव-लम्बित है। उपयोगवाद तथा परमार्थवाद की उनके यहां कोई चर्चा नहीं है। सच तो यह कि सर्वसाधारण में नीति का उपदेश करने के लिए इनकी आवश्यकता ही क्या थी। वह सदाचार जिसकी नीति दर्शन के सिद्धान्तों पर होती है आर्मिक सदाचार से कितने ही विषयों में विरोध करता है और यदि उरुका पूरा पूरा पालन किया जाय तो संभव है कि समाज में घोर विश्वव मच जाय।

लेकिन सादी कोरे नीतोपदेशक ही न थे, वह वड़े सभाचतुर, श्रीर विनोदशील पुरुप थे। उच विचार के मनुष्यों में विनोद एक गुण है। कोई पत्ती श्राठों पहर श्राकार में नहीं उड़ सकता। शेख़ सादी के हास्य के संबन्ध में बहुत सी कथायें प्रचलित हैं, और एक श्रश्लील काव्य प्रन्थ है जो उनका लिखा हुआ वतलाया जाता है। यदि इन कथाओं पर विश्वास करें श्रीर इस काव्य को सादी का रचा हुआ। मान लें तो सादी को नीतोपदेश का श्रधिकार ही न रहे। सादी चतुर श्रवश्य थे श्रौर जिस तरह राजा वीरवल की चतुराई को प्रदर्शित करने में लोगों ने कितनी ही गन्दी कथायें उनके गले मढ़ दी हैं, उसी तरह सादी के विवेकहीन प्रशंसकों ने भी उनके नाम को कलंकित कर दिया है। वास्तव में वह श्रश्लील कवितायें उनकी नहीं होसकतीं। उन में उनकी अनुठी रचनाशैली का विलकुल पता नहीं।

सादी ने सन्तोष पर वड़ा ज़ोर दिया है। जो उनके सदाचार शिज्ञा का एकमात्र मृलाधार है। वह स्वयं बड़े सन्तोषी मनुष्य थे। एक वार उनके ऐरों में ज़ूते नहीं थे, रास्ता चलने में कप्ट होता था। आर्थिक दशा भी ऐसी नहीं थी कि जुता मोल लेते। चित्त वहुत खिन्न हो रहा था। इसी विकलता में कूफ़ा की मस्जिद में पहुंचे तो एक आदमी को मस्जिद के द्वार पर वैठे देखा जिस के पांव ही नहीं थे। उसकी दशा देख कर सादी की आंखें खुल गई। मस्जिद से चले आये और ईश्वर को धन्यवाद दिया कि उसने उन्हें पांव से तो घश्चित नहीं किया। ऐसी शिक्षा इस वीसवीं शताब्दि में कुछ अनुपयुक्त सी प्रतीत होती है। यह असन्तोष का समय है। आजकल सन्तोष और उदासीनता में कोई अन्तर नहीं सममा जाता। और समाज की उन्नति असन्तोष की स्थुणी समभी जाती है। लेकिन सादी की सन्तोषिता स उद्योग की उपेक्षा नहीं करती। उनका कथन है कि यद्यपि ईश्वर समस्त स्थिर की सुधि लेता है लेकिन अपनी जीविका के लिए यह करना मनुष्य का परम कर्तव्य है।

यद्यपि सादी की भाषा लालित्य का हिन्दी अनुवाद में दर्शाना वहुत ही कठिन है तथापि उनकी कथाओं और वाक्यों से उनकी शैली का भली भांति परिचय मिलता है। निस्संदेह वह समस्त साहित्यसंसार के एक समुज्यल रल हैं, और मनुष्यसमाज के एक सखे पथादर्शक। जब तक सरल मार्चो को समस्तेने वाले, और भाषा लालित्य का रसास्वादन करने वाले प्राण्य संसार में रहेंगे तब तक सादी का सुयश जीवित रहेगा, और उनकी प्रतिमा का लोग आदर करेंगे।



## थोक तथा सार्वजनिक संस्थात्रों के लुरीदारों को उचित कमीशन ।

कलकते में मिलनेवाली सब प्रकार की बङ्गला तथा खंग्रेज़ी की स्कूली और भिन्न २ विषयों की घोक तथा फटकर पुस्तकें बाहर भेजी जाती हैं।

पजेन्सी से हिन्दी की उत्तम २ पुस्तक भी प्रकाशित होती हैं। लेखक श्रीर प्रन्यकार पत्रव्यवहार करने की हुएा करें। जो कुछ पृह्यिप, उत्तर तत्काल दिया जाता है। यहा सन्दी पना सुफ्त भंगाकर देखिए।

पता—

हिन्दी पुस्तक एजेन्सी,

१२६ हैरिसन रोड-कलकत्ता।

